वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
1999-2000

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

NEW DELHI

विषय–सूची

संकल्पना 5

न्यास का निर्माण 7

संगठन 8

संक्षिप्त विवरण तथा झलकियां 10

कलानिधि

कार्यक्रम क : संदर्भ पुस्तकालय 22
कार्यक्रम ख : सांस्कृतिक अभिलेखागार 27

कलाकोश

कार्यक्रम क : कलातत्त्वकोश 33
कार्यक्रम ख : कलामूलशास्त्र 34
कार्यक्रम ग : कलासमालोचन 36
कार्यक्रम घ : भारतीय कलाओं के रूपक 37
कार्यक्रम ङ. : क्षेत्र अध्ययन 38

जनपद–सम्पदा

कार्यक्रम क : मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह 42
कार्यक्रम ख : बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा गतिविधियां 43
कार्यक्रम ग : जीवन शैली अध्ययन 44
कार्यक्रम घ : यूनेस्को चेयर 48

कलादर्शन

कार्यक्रम क : संग्रह 50
कार्यक्रम ख : संगोष्ठियां और प्रदर्शनियां 51
कार्यक्रम ग : स्मारकीय व्याख्यान 58
कार्यक्रम घ : अन्य कार्यक्रम 59

अन्तर्राष्ट्रीय संवाद

सूत्रधार

क	:	कार्मिक	66
ख	:	आपूर्ति एवं सेवाएं	66
ग	:	शाखा कार्यालय	66
घ	:	वित्त एवं लेखे	67
ङ	:	आवास	68
च	:	शोधवृत्ति योजनाएं	68
छ	:	राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ संबंध स्थापन	70

भवन परियोजना

अनुबन्ध

1.	:	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य (6.1.2000 तक)	75
2.	:	कार्यकारिणी समिति के सदस्य (16.1.2000 तक)	81
3.	:	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची	84
4.	:	वरिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं/कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं की सूची	86
5.	:	वर्ष 1999–2000 के दौरान हुई प्रदर्शनियां	88
6.	:	वर्ष 1999–2000 के दौरान हुई संगोष्ठियां/कार्यशालाएं	89
7.	:	फिल्म/वीडियो प्रलेखनों की सूची अप्रैल, 1999 से मार्च 2000 तक	89
8.	:	1999–2000 के दौरान आयोजित व्याख्यान	92
9.	:	1999–2000 के दौरान निकाले गए प्रकाशन	96

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

वार्षिक रिपोर्ट – 1999–2000

संकल्पना

श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति में स्थापित इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कल्पना एक ऐसे स्वायत्त संस्थान के रूप में की गई है जिसमें सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक अलग अस्तित्व रखते हुए भी पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में, प्रकृति, सामाजिक संरचना और ब्रह्माण्ड व्यवस्था के साथ पारस्परिक रूप से सम्बद्ध हो।

कलाओं के विषय में यह दृष्टिकोण जो मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखण्ड रूप से जुड़ा हो, और उसके लिए आवश्यक भी है, श्रीमती गांधी की इस मान्यता पर आधारित है कि कलाओं की भूमिका मनुष्य के लिए व्यक्तिगत रूप में तथा एक सामाजिक प्राणी के रूप में उसके अंतरंग गुणों को विकसित करने के लिए आवश्यक है। यह दृष्टिकोण सम्पूर्ण विश्व को एक समझने की (विश्वबन्धुत्व) एवं विश्व की अखंडता को भावना (वसुधैव कुटुम्बकम्) में समाविष्ट है जो भारतीय परम्परा में सर्वत्र मुखरित है और जिस पर महात्मा गांधी तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे आधुनिक भारतीय मनीषियों ने भी बल दिया है।

यहां कलाओं के क्षेत्र को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है, जिसमें शामिल है : लिखित तथा मौखिक रूप में उपलब्ध सूचनात्मक एवं समीक्षात्मक सहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, और लेखाचित्र से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसी दृश्य कलाएं, अपने अधिक से अधिक व्यापक अर्थो में संगीत, नृत्य, नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाएं और मेलों, उत्सवों तथा जीवन शैली में उपलब्ध वह सब कुछ जो किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो । प्रारंभ में केन्द्र ने अपना ध्यान भारत पर ही केन्द्रित किया है, लेकिन आगे चलकर वह अपना क्षेत्र अन्य सभ्यताओं तथा संस्कृतियों तक बढ़ा लेगा। अनुसंधान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, सूचनात्मक कार्यकलाप तथा प्रदर्शन के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से केन्द्र कलाओं को प्राकृतिक तथा मानवीय

परिवेश के संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेगा।

अपने समस्त कार्य में केन्द्र का आधारभूत दृष्टिकोण बहुविषयक तथा अन्तर्विषयक दोनों प्रकार का होगा।

केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है :

1. कलाओं, विशेषकर लिखित, मौखिक और दृश्य स्रोत सामग्री के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना।

2. कला, मानविकी और सामान्य सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित संदर्भ ग्रंथों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों के अनुसंधान और प्रकाशन के कार्यक्रम हाथ में लेना।

3. सुव्यवस्थित रूप से वैज्ञानिक अध्यनों और सजीव प्रदशनों का आयोजन करने के लिए क्रोड संग्रह के साथ–साथ जनजातीय और लोक कला प्रभाग स्थापित करना।

4. प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सूचनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद, विचार–विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराना।

5. दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना, ताकि बौद्धिक समझबूझ के उस अंतर को दूर किया जा सके जो अक्सर एक तरफ आधुनिक विज्ञान और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति, जिसमें परम्परागत कला–कौशल तथा ज्ञान शामिल है, के बीच उत्पन्न हो जाता है।

6. भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसंधान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन के लिए मॉडल तैयार करना।

7. विविध सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल ताने–बाने के रचनात्मक तथा गतिशील तत्वों को स्पष्ट करना।

8. भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता को बढ़ावा देना।

9. कला और संस्कृति के अन्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार साधनों का विकास करना और कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर के संबंध में अनुसंधान कार्य करने और उनको मान्यता प्रदान कराने के लिए भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों और अन्य शिक्षा संस्थाओं के सथ संबंध स्थापित करना।

विशेष कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं के माध्यम से कलाओं में अन्योन्याश्रय संबंध, विभिन्न क्षेत्रों के बीच परस्पर प्रभाव तथा जनजातीय, ग्रामीण और शहरी तथा लिखित एवं मौखिक परम्पराओं के बीच पारस्परिक संबंधों का पता लगाया जाएगा और उनको अभिलिखित तथा प्रस्तुत किया जाएगा।

न्यास का निर्माण

भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, कला विभाग के संकल्प संख्या एफ. 16–7/86–कला, दिनांक 19 मार्च, 1987 के अनुसरण में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास को नई दिल्ली में दिनांक 24 मार्च, 1987 को विधिवत् रूप से गठित एवं पंजीकृत किया गया था।

प्रारंभ में एक सात–सदस्यीय न्यास स्थापित किया गया, जिसका समय–समय पर पुनर्गठन किया गया।

भारत सरकार द्वारा न्यास भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के कार्यालय ज्ञापन संख्या एफ. 16 –13/95 लिब. दिनांक 07.01.2000 के अनुसार पुनर्गठित किया गया। पुनर्गठित न्यास के न्यासियों की सूची अनुबन्ध –1 पर दी गई है।

नवगठित न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की सूची अनुबन्ध –2 पर दी गई है।

संगठन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संकल्पनात्मक योजना में वर्णित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए और अपने प्रमुख लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए केन्द्र अपने पाँच प्रभागों के माध्यम से कार्य करता है, जो संरचनात्मक दृष्टि से स्वायत्त होते हुए भी कार्यक्रमों के आयोजनों के मामलें परस्पर जुड़े हुए है।

इन्दिरा गांधी कलानिधि : इसमें (क) मानविकी विषयों तथा कलाओं में अनुसंधान के लिए प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करने के लिए बहुविध संग्रहों से सुसज्जित सांस्कृतिक संदर्भ पुस्तकालय है, जिसे सम्बल प्रदान करने के लिए (ख) कलाओं, मानविकी विषयों तथा सांस्कृतिक परम्पराओं (धरोहर) पर एक कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डेटा बैंक, और (ग) सांस्कृतिक अभिलेखागार तथा कलाकारों/विद्वानों के बहुविध व्यक्तिगत संग्रह और (घ) क्षेत्र अध्ययनों की व्यवस्था है।

इन्दिरा गांधी कलाकोश : यह प्रभाग आधारभूत अनुसंधान कार्य करता है। यह ऐसे दीर्घकालिक कार्यक्रम आरंभ करता है, जिनमें (क) कला और शिल्प की आधारभूत संकल्पनाओं का एक कोश तथा बुनियादी तकनीकी शब्दों का संग्रह और अंतर्विषियक शब्दावलियां, (ख) भारतीय कलाओं के आधारभूत ग्रंथों की श्रृंखला (कलामूलशास्त्र), (ग) भारतीय कलाओं के विषय में समीक्षात्मक कृतियों के पुनर्मुद्रण की श्रृंखला (कलासमालोचन) और (घ) भारतीय कलाओं का एक बहुखंडीय विश्वकोश के कार्यक्रम सम्मिलित है।

इन्दिरा गांधी जनपद–सम्पदा : यह प्रभाग (क) लोक तथा जनजातीय कलाओं और शिल्पों से संबंधित महत्वपूर्ण सामग्री का संग्रह तथा प्रलेखन करता है, (ख) बहुविध संचार माध्यमों के जरिए प्रस्तुतियां करता है। (ग) जनजातीय समुदायों की बहुविषयक जीवन शैलियों के अध्यन के लिए व्यवस्था करता है जिससे कि सामग्री भारतीय सांस्कृतिक दृश्य प्रपंच और पर्यावरणात्मक, परिस्थितिक, कृषिविषयक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक आयामों के ताने–बाने के वैकल्पिक मॉडल तैयार किए जा सकें। इनके अलावा,

(घ) उसने एक बाल रंगशाला स्थापित की है और (ड.) एक संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित करने का भी प्रस्ताव है।

इन्दिरा गांधी कलादर्शन : यह प्रभाग कला एवं संस्कृति के एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर अंतर्विषयात्मक संगोष्ठियों एवं प्रदर्शनियों के लिए एक मंच की व्यवस्था करता है। इसके भवनों में तीन रंगशालाएं (थियेटर) और बड़ी दीर्घाएं होंगी।

इन्दिरा गांधी सूत्रधार : यह अन्य सभी प्रभागों की प्रशासनिक, प्रबन्धकीय और संगठनात्मक सहायता तथा सेवाएं प्रदान करता है।

संस्था के शैक्षणिक प्रभाग अर्थात् कलानिधि तथा कलाकोश अपना ध्यान प्रमुख रूप से बहुविध प्राथमिक एवं गौण सामग्री के संग्रह पर लगाते हैं, आधारभूत संकल्पनाओं की खोज करते है, रूप के सिद्वान्तों का पता लगाते है और पारिभाषिक शब्दावलियों को स्पष्ट करतें है। वे यह कार्य सिद्वान्त और पाठ (शास्त्र) और बौद्विक चर्चा (विमर्श) और निर्वचन (मार्ग) के स्तर अभिव्यक्ति् प्रक्रिया जीवन–कार्य तथा जीवन–शैली और मौखिक परम्पराओं पर ध्यान देते है। चारों प्रभागों के कार्यक्रम सम्मिलित रूप से कलाओं को उनके जीवन तथा अन्य विषय–संबंधी संदर्भों में प्रस्तुत करते हैं।

प्रत्येक प्रभाग में अनुसंधान करने, कार्यक्रम बनाने और अंतिम निष्कर्ष निकालने की रीतियां एक–जैसी हैं। हर प्रभाग का कार्य दूसरे प्रभागों के कार्यक्रमों का पूरक होता है।

वार्षिक रिपोर्ट

1 अप्रैल, 1999 से 31 मार्च, 2000 तक

संक्षित विवरण तथा झलकियां

प्रस्तावना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (केन्द्र) अपनी स्थापना के तेरहवें वर्ष (1999–2000) में, कलाओं के एक प्रमुख संसाधन–केन्द्र के रूप में कार्य करते हुए अपने सुपरिभाषित उद्देश्यों को प्राप्त करता रहा। इस हेतु केन्द्र ने कला तथा संस्कृतिके क्षेत्र में एकीकृत अध्ययन एवं शोध कार्यक्रम हाथ में लिए, जैसे, कलाओं तथा तत्संबंधी विषयों के मूल ग्रंथों, पारिभाषिक शब्दावलियों तथा रिपोर्टों का प्रकाशन। इसके अतिरिक्त, केन्द्र ने संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, व्याख्यानों और विभिन्न प्रकार की प्रदर्शनियों तथा मल्टी–मीडिया प्रस्तुतियों के माध्यम से सूजनात्मक एवं समालोचनात्मक संवाद के लिए एक नियमित मंच प्रदान किया। इन कार्यक्रमों के व्याप्ति–क्षेत्र में मूलभूत विज्ञानों तथा मीमांसात्मक विचार एवं संस्कृति से लेकर समकालीन अनुसंधान तक वह सब कुछ समाविष्ट है जिसका संबंध पुरातत्व, मानव विज्ञान, सामाजिक विज्ञानों से लेकर पुस्तकालय विज्ञान, कंप्युटर, मानिविकी विषयों तथा कला इतिहास तक के सभी शास्त्रों से है।

कला तथा संस्कृति के प्रधान संसाध्णन केन्द्र के रूप में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने प्रदर्शनियों तथा संगोष्ठियों जैसे तरह–तरह के कार्यक्रमों के माध्यम से जनसाधारण तथा विद्वज्जन, दोनों ही स्तरों पर ज्ञान के प्रचार–प्रचार में पर्याप्त योगदान दिया। उसने भारत तथा विदेश स्थित अनेक संस्थाओं तथा विद्वानों के साथ संपर्क स्थापित किए और उन्हें सुदृढ़ बनाए रखा।

साथ ही, केन्द्र ने बहुत–सी संथाओं के साथ मिल कर अपने सहयोगात्मक कार्यक्रमों को अधिक व्यापक एवं घनिष्ठ बनाए रखने का प्रयास जारी रखा। आज इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विद्वानों तथा संस्थाओं के साथ बराबर संपर्क बनाए हुए है जो एक तरह से केन्द्र के बृहत्तर परिवार के ही सदस्य है।

संग्रह

वर्ष के दौरान, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने मुद्रित पुस्तकों, माइक्रोफिल्मांकित पांडुलिपियों, स्लाइडों, फोटोग्राफों, ऑडियो–विज्युअल सामग्री तथा मानव जाति विज्ञान आदि से संबंधित अपने संग्रहों को और समृद्ध बनाया। केन्द्र के संदर्भ पुस्तकालय ने इस वर्ष खरीद, उपहार तथा आदान–प्रदान के माध्यम से मुद्रित पुस्तकों, प्रबंध ग्रंथों, पत्र–पत्रिकाओं, ग्रंथ सूचियों आदि के कुल मिला कर 4562 खंड प्राप्त किए जिनमें कुछ अप्राप्य एवं दुर्लभ प्रकाशन भी शामिल थे। इनमें से 2253 पुस्तकें विभिन्न संस्थाओं तथा विद्वानों से उपहार–स्वरूप प्राप्त हुई। उपर्युक्त प्रकाशनों के अतिरिक्त, कला, पुरातत्व, मानवविज्ञान, पुस्तक समीक्षा, कंप्यूटर तथा सूचना विज्ञान, संरक्षण, संस्कृति, लोकसाहित्य, इतिहास मानविकी विषय, भाषाविज्ञान, साहित्य, संग्रहालय अध्ययन, दर्शन, धर्म, रंगशाला, क्षेत्र अध्ययन आदि विभिन्न विषयों की 385 पत्र–पत्रिकाएं मंगवाई जाती रहीं। कुल मिला कर 3518 पुस्तकों को वर्गीकृत तथा सूचीबद्ध किया गया और 6000 प्रकाशनों की जिल्दबंदी करवाई गई।

इस वर्ष, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान (पुणे), सरस्वती भवन पुस्तकालय (वाराणसी), ओरियंटल रिसर्च इन्स्टिट्यूट एंड मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी (तिरुवनंतपुरम) और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (दिल्ली) से पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्मों की 1349 कुंडलियां प्राप्त हुई। इसके अलावा, धर्म तथा इतिहास के विषय की 7 दुर्लभ पुस्तकें जो 18वीं और 19वीं शताब्दियों में प्रकाशित हुई थी, इस वर्ष प्राप्त की गईं। इनके अतिरिक्त, रुस की विज्ञान अकादमी के सामाजिक विज्ञान सूचना संस्थान "इनियन" मास्को से 269 माइक्रोफिल्मों और नीदरलैंड की इंटर डौक्यूमेंटेशन कंपनी (आईडीसी), लीडन से 19वीं तथा 20वीं शताब्दियों के रुसी धारावाहिकों (सीरियल) की पुरानी फाइलों के 24 शीषकों के अंतर्गत समाविष्ट 2746 माइक्रोफिशें प्राप्त हुई।

नई–नई स्लाइडें प्राप्त होने के फलस्वरूप स्लाइडों का संग्रह बढ़ता गया। वर्ष के दौरान कुल मिला कर 1061 स्लाइडें संग्रह में जोड़ी गई, इनमेगं से 107 स्लाइडें हिमालय के प्राकृतिक दृश्यों की थीं। और 1999 स्लाइडें भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे से प्राप्त हुई थीं।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के जनपद–संपदा प्रभाग ने गुजरात, कर्नाटक पंजाब और हरियाणा से कसीदाकारी की वस्तुएं प्राप्त की जिनसे सित्रयों के दैनिक जीवन तथा उनकी जीवन शैली में उनकी सूजनशलिता का पता चलता है।

साथ ही, पिछले वर्ष के दौरान प्राप्त सामग्री की अवाप्ति रजिस्टर में चढ़ाने, उनका वर्गीकरण तथा प्रलेखन करने, कैटलॉग और कंप्यूटर में दर्ज करने का कार्य भी चलता रहा। वर्ष 1999–2000 के दौरान, 3518 पुस्ताकों का वर्गीकरण तथा कैटलॉग कार्य किया गया, अध्येताओं तथा शोधकर्ताओं के उपयोग के लिए पुस्ताकों के 1601 अभिलेखों को कंप्यूटर में भरा गया और संदर्भ पुस्तकालय में उपयोग के लिए 3140 स्लाइडों की दूसरी प्रतियां तैयार की गई। 37,669 स्लाइडें स्कैनिंग/डिजिटीकरण के लिए सांस्कृतिक सूचना प्रयोगशाला में भेजी गई। अमुद्रित सामग्री के कैटलॉग कार्य के अंतर्गत, आयुर्विज्ञान के इतिहास के अध्ययन के लिए लंदन स्थित वेलकम संस्थान की 23 कुंडलियां (50 पांडुलिपियां) कैटलॉग में दर्ज की गई। इसके अलावा, 195 अभिलेखों का "कैट–कैट" डेटाबेस में जोड़ा गया।

प्रलेख

वर्ष के दौरान, पूर्वोत्तर भारत की समृद्व परंपरा का प्रलेखन करने के लिए विशेष प्रयत्न किए गए। मणिपुरी शैली में गीतगोविन्द, लाई हरौबा, महारस, वांगला और गारो उत्सव की प्रलेखन किया गया, पहले की भांति इस वर्ष भी विशिष्ट महानुभावों के साथ हुए साक्षात्करों को अभिलेखबद्व किया गया। ये विशिष्ट व्यक्ति थे : महान उपन्यासकार डॉ॰ मुल्कराज आनंद, पद्श्री सम्मान से विभूषित सुप्रसिद्व शास्त्रीय संगीतज्ञा श्रीमती सुमति मुटाटकर और लोकसाहित्यविद् श्री देवेन्द्र सत्यार्थी। इसके अलावा, केन्द्र ने केरल के 12 मंदिर/सथानों में कृष्ण और गोपियों तथा दुर्गा, शिव–पार्वती के विवाह, और रामायण के पौराणिक दृश्यों का चित्रित करने वाले उत्कृष्ट भित्तिचित्रों का भी प्रलेखन किया। इस वर्ष, मणिपुरी लागों के जीवन–वृत्त से घनिष्ठता से जुड़े, 15 घंटों के नटसंकीर्तन काय्रक्रम को भी फिल्मांकित किया गया।

कार्यक्रम

दक्षिण–पूर्व एशिया, पूर्व एशिया तथा स्लाविक और मध्य एशिया के कार्यक्रमों के अंतर्गत दक्षिण–पूर्व एशिया के विषय में अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण संदर्भ सामग्री का चयन तथा अर्जन किया गया। ग्लिपंसेज ऑफ अर्ली इंडो–इंडोनेशिया कल्चर : कलेक्टिड पेपर्स ऑफ लेट एच.वी. सरकार शीर्षक ग्रंथ तैयार किया जा रहा है और आशा है कि यह जुलाई, 2000 तक अंतिम रूप से प्रकाशित कर दिया जाएगा। पूर्व–एशिया कार्यक्रम के अंतर्गत, दो पुस्तकें, अर्थात् "फोलोइंग दि फुटस्टेप्स ऑफ जुआन जांग : तान युनशान एंड इंडिया" प्रकाशित की गई है। इनके अतिरिक्त, मध्य एशियाई कला तथा संस्कृति विषय के लगभग 1200 प्रकाशनों (पत्रिकाओं सहित) की एक विस्तुत ग्रंथ सूची तैयार की गई है। इसे इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की वेबसाइट पर रखा जाएगा।

भारतीय संस्कृति की ग्रंथ–परंपराओं के अवगाहन तथा उनमें छिपे गूढ़ ज्ञान को प्रकाश में लाने के विशिष्ट उद्देश्य से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को कलाकोश प्रभाग अनुसंधान, शब्दकोश निर्माण, कला, संस्कृति और ऐसे ही अन्य विषयों से संबंधित मूल ग्रंथों के समालोचनात्मक संस्करण और विख्यात विद्वानों की सुप्रसिद्ध समालोचनात्मक कृतियों के पुनर्मुद्रण के कार्यक्रमों में संलग्न रहा। वर्ष 1999–2000 में प्रकाशित उल्लेखनीय प्रकाशन थे : (1) कलात्वकोश खंड –1 का संशोधित संस्करण (मुद्रणाधीन), (2) काण्वशतपथ ब्राह्मण, खंड–3 संपादक एवं अनुवादक : सी. आर. स्वामिनाथन, (3) "इन फेवर ऑफ गोविन्ददेवजी, संपादक : मोनिका होर्स्टमैन (4) "बारोक इण्डिया", लेखक : जोस परैरा। इनके अलावा अनेक प्रकाशन मुद्रण की भिन्न–भिन्न अवस्थाओं में है, इनमें कुछ ये है : (1) काण्वशतपथब्राह्मण, खंड–4 और 5, (2) संगीत मकरन्द, (3) पुष्प सूत्र, (4) "जैन टैम्पल्स ऑफ दिलवाड़ा एंड रणकपुर" लेखक : प्रो॰ सहदेव कुमार, (5) "आइकोनोग्राफी ऑफ दि बुद्विस्ट स्कल्पचर ऑफ उड़ीसा, लेखक : थॉमस डोनाल्डसन, (6) सिलेक्टिड राईटिंग्स ऑफ प्रो0 जी.डी. सोन्थीमर (खंड–2), और (7) दि सिटी एंड दि स्टार्स।

जनपद–संपदा प्रभाग द्वारा भी वर्ष 1999–2000 के दौरान ऐसे ही महत्वपूर्ण प्रकाशन तैयार किए जिनमें संगोष्ठियों/सम्मेलनों के कार्य–वृत्त और विभिन्न विद्वानों द्वारा किए गए शोधकार्य समाविष्ट है। ये ग्रंथ मुद्रण के लिए तैयार हैं। इनमें उल्लेखनीय है : (1) दि पेपर्स

ऑन माइंड, मैन एंड मास्क, (2) ग्लोबल रॉक आर्ट, (3) कल्चर ऑफ पीस, संपादक : प्रो॰ बी.एन. सरस्वती, (4) विलेज इंडिया : आइडेन्टीफिकेशन एंड एनहान्समेंट ऑफ कल्चरल हेरिटेज, लेखक : प्रो0 बी.एन. सरस्वती, और (5) विहंगम (इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का समाचार पत्रक), खंड 7 और 8 । इनके अलावा अन्य कई प्रकाशन, मुद्रण की भिन्न–भिन्न अवस्थाओं में हैं, जैसे, (1) "प्लेसनेम्स इन कश्मीर", लेखक : बी. के. रैना एवं एस. एल. साधु, (2) लद्दाख की लोक संस्कृति, लेखक : प्रेमसिंह जिना, (3) संथाल वर्ल्ड व्यू शीर्षक संगोष्ठी के शोधपत्र, (4) कथावाचन और कथावाचक, (5) "वायस ऑफ दि सैक्रिड इन अवर टाइम्स" और (6) "परंपरा दि इंडिविज्युअल" । वर्ष के दौरान निकाले गए प्रकाशनों में शामिल हैं, (1) कल्चर ऑफ पीस, और विहंगम (केन्द्र का समाचार पत्रक)

खण्ड–6 व 7

संगोष्ठियां / सम्मेलन / कार्यशालाएं

वर्ष 1999–2000 के दौरान निम्नलिखित संगोष्ठियां / सम्मेलन / कार्यशालाएं आयोजित की गई :

(1) वार्षिक हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में 14 सितंबर, 1999 को केंद्र में "राजभाषा और शास्त्र" विषय पर एक गोष्ठी आयोजित की गई।

(2.) वास्तु–विद्या प्रतिष्ठानम और कालिकट विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के सहयोग से, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने "वास्तु–विद्या : शास्त्र एवं प्रयोग" विषय पर 23 से 26 फरवरी 2000 तक कालिकट में एक संगोष्ठी आयोजित की। व्यावसायिक वास्तुविद, स्थापत्य एवं पुरातत्व के विद्वान और इंजीनियर एवं स्थपति / वास्तुशिल्पि इस संगोष्ठी में उपस्थित हुए।

कार्यशालाएं

3. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा " पांडुलिपि विज्ञान और पुरालिपि–शास्त्र" पर एक कार्यशाला पुणे विश्वविद्यालय के सहयोग से दिनांक 13 से 31 दिसंबर, 1999 तक आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 20 अध्येताओं और 15 विषय–विशेषज्ञों ने भाग लिया।

4. "असली विरासत" विषय पर एक एक–दिवसीय कार्यशाला ब्रिटिश काउन्सिल प्रभाग के सहयोग से 1 फरवरी, 2000 को आयोजित की गई। प्रबंध अध्ययन क्षेत्र के जाने–माने महानुभावों तथा पुरातत्व, मानव विज्ञान, कला–इतिहास एवं संग्रहालय विज्ञान के विद्वानों/अध्येताओं ने बड़ी संख्या में इस कार्यशाला में भाग लिया।

5. दिनांक 11 मई, 1999 को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर केन्द्र के मल्टीमीडिया प्रलेखन कार्यकलापों के विषय में एक व्याख्यान तथा प्रदर्शन ओयोजित किया गया। कंप्यूटर प्रौद्योगिकी क्षेत्र के मूर्धन्य विशेष डॉ0 मुकुल के. सिन्हा ने समारोह की अध्यक्षता की।

प्रदर्शनियां

इन्दिरा गांधी कला केन्द्र के कलादर्शन प्रभाग ने आलोच्य अवधि में ये सात प्रदर्शनियां लगाई :

1. पंचतंत्र की कहानियों पर आधारित बच्चों की चित्रकारियां, 2. कलेवाला–फिनलैंड का राष्ट्रीय महाकाव्य, 3. स्वप्न के कुछ बच्चे–एक छाया–वृत्त चित्र प्रदर्शनी, 4. अनन्त क्षितिज, 5. आइकॉन्स (प्रतिमाएं) 6. घटनाएं–ज्योतिर्मय क्षणों की फोटो–डायरी, 7. भारत–अमेरिका संबंध।

1. पंचतंत्र की कहानियों पर आधारित बच्चों की चित्रकारियां:

यह प्रदर्शनी राष्ट्रीय बाल भवन के सहयोग से, 21 सितंबर, से 20 नवंबर, 1999 तक बाल भवन संग्रहालय में लगाई। प्रदर्शनी ने बच्चों में उत्कट अभिरूचि जागृत की। निर्णायक मंडल ने सर्वोत्तम चित्रों का चयन किया और प्रत्येक वर्ग में तीन–तीन पुरस्कार हरियाली तीज के शुभ दिवस पर वितरित किए जो इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के जनपद–सम्पदा प्रभाग का वार्षिक दिवस भी था।

2. कलेवाला–फिनलैंड का राष्ट्रीय महाकाव्य :

दिनांक 12 से 22 अक्तूबर, 1999 तक, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने फिनलैंड

के राजदूतावास के सहयोग से यह प्रदर्शनी लगाई। प्रदर्शनी का उद्घाटन फिनलैंड के राजदूत महामहिम बेंजामिन बस्तिन द्वारा 11 अक्तूबर 1999 को किया गया। प्रदर्शनी में दक्षिण भारत के सिरी महाकाव्य के विषय में भी एक अनुभाग था जिसका प्रलेखन कार्य भारत–फिनलैंड के सम्मिलित दल ने किया था।

3. स्वप्न के कुछ बच्चे :

छाया वृत्तचित्र की एक रोचक प्रदर्शनी 16 नवंबर से 5 दिसंबर,1999 तक आस्ट्रेलिया की एक वैकल्पिक संस्कृति की उत्पत्ति की खोज करने का प्रयास करते हुए समकालीन संदर्भ में उनके सामाजिक सांस्कृतिक और आध्यामित्मक प्रभाव को दर्शाया गया था। टाटा उर्जा अनुसंधान संस्थान के सुप्रसिद्व अध्येता (फेलो) प्रो0 टी. एन. खूशू द्वारा इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया।

4. अनन्त क्षितिज :

दिल्ली निवासी तीन फोटो–पत्रकार सर्वश्री गुरिन्दर ओसान, प्रदीप भाटिया और दिनेश कृष्णन द्वारा खीचें गए फोटोग्राफों की यह प्रदर्शनी इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परिसर में स्थित माटीघर में 4 से 30 जनवरी 2000 तक लगाई गई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन एक सुप्रसिद्व वरिष्ठ फोटोग्राफर श्री एस. पी. पॉल द्वारा किया गया। दर्शकों ने प्रदर्शनी को खूब सराहा।

5. आइकान्स/प्रतिमाएं :

शुभ प्रसन्न की चित्रकारियों की एक प्रदर्शनी आर्ट इंडस के सहयोग से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द में 18 फरवरी से 5 मार्च, 2000 तक लगाई गई। भारत में जर्मनी राजदूत डॉ॰ हेनरिच डीरिच ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

6. घटनाएं–ज्योतिर्मय क्षणों की एक फोटो डायरी :

गुजरात के सुप्रसिद्व फोटोग्राफर श्री अश्विन मेहता द्वारा यह प्रदर्शनी इन्दिरा

गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में 9 से 31 मार्च 2000 तक आयोजित की गई। भारत सरकार के संस्कृति विभाग के सचिव डॉ0 आर.बी. वैद्यनाथ ऐयर ने इसका उद्घाटन किया और अनेक जाने–माने फोटोग्राफरों तथा पत्रकारों आदि ने इसका अवलोकन किया।

7. भारत–अमेरिका संबंध :

संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की भारत यात्रा के अवसर पर यह प्रदर्शनी विदेश मंत्रालय, श्रव्य दृश्य प्रचार निदेशालय (डीएवीपी) और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के माटीघर में 15 से 23 मार्च 2000 तक लगाई गई। प्रदर्शनी का उद्घाटन माननीय विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह भारत में संयुक्त राज्य अमेरिका के राजदूत महामहिम श्री रिचार्ड कैलेस्टे और माननीय सूचना तथा प्रसारण मंत्री श्री अरुण जैतली ने किया। अनेक राजनयिक और अन्य महानुभाव इस अवसर पर उपस्थित थे।

फिल्म प्रदर्शन

1. "एक थी गुलाब " कृष्ण राघव निर्मित : कानपुर की सुप्रसिद्ध नौटंकी कलाकार गुलाब बाई के जीवन तथा उपलब्धियों पर आधारित यह फिल्म वर्ष के दौरान कइ अवसरों पर दिखाई गई।

2. " नवकलेवर" – पृथ्वी राज मिश्र निर्मित : यह फिल्म " नवकलेवर" पर्व की है जो हर 12 से 17 वर्ष बाद चंद्रमा की शुभ स्थिति के आने पर, उड़ीसा में पुरी के मंदिरों में विद्यमान देवी–देवताओं–शुभद्रा, बलभद्र और जगन्नाथ को नया कलेवर प्रदान करने के लिए मनाया जाता है।

3. " एलिजाबेथ ब्रूनर के साथ साक्षात्कार का वीडियो प्रलेखन"

4. " मित्रलाभ" – पंचतंत्र की कहानियों पर आधारित एक नृत्य नाटक (बैले) की वीडियो फिल्म जो रंग श्री ट्रूप, भोपाल के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया।

5. " ग्रीष्मकालीन शिविर" – "कथाकलि" पर केन्द्र प्रलेखन, सात भागों में

6. " नाद नगर ना उजारो" – एक सुप्रसिद्ध ध्रुपद गायिका असगरी बेगम के जीवन तथा उपलब्धियों पर केन्द्र के अभिलेखागार में मौजूद वृत्त–चित्र।

7. " तेय्यम : भगवान विष्णु मूर्ति का वार्षिक आगमन" – श्री एरिक डे माकर द्वारा वृत्त–चित्र।

इनके अलावा, कला, स्थापत्य, पुरातत्व, संस्कृति, कला–इतिहास, सौंदर्यशास्त्र, संगीत, दर्शन और विज्ञान के विभिन्न पक्षों पर बत्तीस सार्वजनिक निदर्शनात्मक व्याख्यान तथा वार्ताएं आलोच्य अवधि के दौरान हुई।

आगन्तुक महानुभाव

अंतर्राष्ट्रीय परामर्शदाताओं सहित विषय विशेषज्ञ तथा विशिष्ट विद्वान एवं मूर्धन्य महानुभाव बड़ी संख्या में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में पधारे। उनमें कुछ अधिक उल्लेखनीय थे : प्रो॰ टी. एस. मैक्सवेल, प्राच्य कला–इतिहास विभाग, बोन विश्वविद्यालय, जर्मनी, डा॰ आर. नागस्वामी, राष्ट्रीय व्यावसायिक सहयोग और अन्त सांस्कृतिक अध्ययन के अध्येता/विद्वान, ज्यूरिच, स्विट्रलैंड, डॉ॰ आदित्य मलिक, भारत विद्या (इंडोलॉजी) विभाग, हीडलवर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी, डा॰ एच.जी. रानाडे, राष्ट्रीय व्यावसायिक परियोजना कार्मिक (एनपीपीपी), श्री एवं श्रीमती फिलियोज़ा, श्री रोबर्ट स्टोन, वर्च्युल प्रेजेन्स लि॰ के वैज्ञानिक निदेशक, लन्दन, प्रो॰ विनोद नौटियाल, गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल, डॉ॰ प्रेम कालरा, आई आई टी, दिल्ली, डॉ॰ गेरहर्ड ब्रूनर, ग्रैज फेस्टिवल्स के निदेशक और बर्लिन बैले के प्रबंधक, वियना, श्री निकोलस हेंड्रीकस विंक, अध्यक्ष, रॉयल ट्रापिकल इन्स्टिट्यूट (के आई टी) ऐम्सटर्डम, नीदरलैंड, डॉ॰ दुओंग वान खाम, महा निदेशक और कु॰ तिएत होंग डा, उप निदेशक, राजकीय अभिलेखागार विभाग, समाजवादी वियतनाम गणराज्य।

उपर्युक्त महानुभावों के अतिरिक्त, आलोच्य अवधि में विभिन्न क्षेत्रों के छात्र भी बड़ी

संख्या में केन्द्र में आए। ब्यौरा नीचे दिया गया है : (1) लोंग आईलैंड विश्वविद्यालय के उन्नीस स्नातक–पूर्व अमेरिका छात्र, दिसंबर 1999 के दौरान, नृत्य, संगीत, स्थापत्य, पुरातत्व और धर्म विषयक अभिविन्यास कार्यक्रम के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आए।

2. अंतर्राष्ट्रीय ईसाई विश्वविद्यालय, टोकियो के 20 स्नातक–पूर्व छात्र मार्च, 2000 में केन्द्र में आए। 3. बंगलौर विश्वविद्यालय के बहुत–से इंजीनियरी स्नातक फरवरी में केन्द्र आए और उन्होंने यहां के कार्यकलापों के बारें में जानकारी प्राप्त की। 4. फरवरी 2000 में, चेकोस्लोवाकिया के चार भारत–विद्या अध्येता, भारतीय भाषाओं पर आगे अध्ययन करने के लिए, विदेश मंत्रालय के अनुरोध पर, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र से संबद्ध किए गए। 5. स्विट्जरलैंड की कठपुतली कला की एक छात्रा कु॰ लीसा जोरजे तोर्म कठपुतली विषय पर विचार–विर्मश करने के लिए प्रो॰ माइकेल मेश्के (जो इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संसाधन विद्वान और कठपुतली कला के विशेषज्ञ है) के माध्यम से केन्द्र में आई।

स्मारकीय व्याख्यान

1. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारकीय व्याख्यान

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 16वां आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारकीय व्याख्यान आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मृति न्यास के सहयोग से 19 अगस्त 1999 को नई दिल्ली में आयोजित किया। इस वर्ष का व्याख्यान लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ के उप कुलपति और संस्कृत साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान प्रा॰ वाचस्पति उपाध्याय द्वारा "कालिदास की लालित्य–योजना" विषय पर दिया गया। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की उपकुलपति डॉ0 सरोजिनी महिषी ने समारोह की अध्यक्षता की। विद्वान, लेखन तथा जनसाधारण, बड़ी संख्या में, इस आयोजन में उपस्थित हुए।

2. प्रो॰ निर्मल कुमार बोस स्मारकीय व्याख्यान

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने चतुर्थ प्रो॰ निर्मल कुमार बोस स्मारकीय

व्याख्यान दिनांक 22 और 23 मार्च, 2000 को आयोजित किया। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर टी. एन. पांडे ने (1) "भारत की जनजातियों के विषय में प्रो0 बोस के विचार और (2) हिमालय की तराई के थारू लोगों के देवी–देवता" विषयों पर व्याख्यान दिए।

इन्दिरा गांधी स्मारकीय अध्येतावृत्ति

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने वर्ष 1999 के लिए इन्दिरा गांधी स्मारकीय अध्येतावृत्ति/फेलोशिप दो चुने हुए विद्वानों : (1) प्रो॰ नलिनी माधव ठाकुर, नियोजन एवं स्थापत्य विद्यालय, नई दिल्ली और (2) प्रो॰ के. एस. बोहरा, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, उड़ीसा को प्रदान की। इन विद्वान द्वारा किए जाने वाले शोधकार्य के विषय हैं – "भारत में ऐतिहासिक नगरों के पुनरूद्धार के लिए ज्ञान प्रणालियां उत्पन्न करना" और "भुवनेश्वर लिंगराज–एक बहुआयामी अध्ययन"

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी.)

सी. डी. रोम के माध्यम से जनसाधारण को प्रस्तुत करने के लिए तैयार की जा रही तीन महत्वपूर्ण मल्टीमीडिया परियोजनाएं निर्माण की भिन्न–भिन्न अवस्थाओं में हैं।

सांस्कृतिक सूचना–विज्ञान प्रयोगशाला के अधिकारियों को अध्ययन यात्राओं, अध्येता–कार्यक्रमों, संगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं, परिचर्चाओं और आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से भारत के भीतर और विदेश में मल्टीमीडिया प्राद्योगिकी से अवगत कराया गया और समुचित प्रशिक्षण दिया गया।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का वेबसाइट से संपन्न किया गया और इस समय इसका वेबस्पेस लगभग 40 एम.बी. का है।

सहयोगात्मक कार्यक्रम

आलोच्य अवधि में, इन्दिरा गाधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने भारत में और विदेशों में, नानाविध विषय–क्षेत्रों में कार्यरत अकादमिक निकायों तथा विद्यावरेण्य संस्थाओं के साथ घनिष्ठ संपर्क बनाए रखा।

न्यास की निधियों का निवेश

न्यास की निधियों के सुचारु तथा कुशल निवेश के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने दो समितियां स्थापित की है : (1) इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की निधियों के दीर्घावधिक निवेश के लिए समिति और (2) अधिशेष ब्याज की आय के अल्पाविधक निवेश के लिए समिति।

आलोच्य अवधि में दीर्घावधिक निवेश समिति की चार बैठकें 25 मई, 22 जून, 27 जुलाई और 3 नवंबर, 1999 को हुई। अल्पवधिक निवेश समिति की बैठक आवश्यकतानुसार होती रही, अथवा उसका अनुमोदन परिपत्र–प्रक्रिया से प्राप्तकर लिया गया।

वर्ष 1999–2000 के दौरान, दीर्घावधिक निवेश और अल्पावधिक निवेश संबंधी समितियों की सिफारिशों पर 15.94 करोड़ रुपए दीर्घावधिक आधार पर और 6.60 करोड़ रुपए अल्पावधिक आधार पर सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों तथा बैंको में निवेश किए गए।

वार्षिक कार्य योजना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कार्यकारिणी समिति और न्यास ने वर्ष 2000–2001 वार्षिक कार्ययोजना का अनुमोदन किया। गत वर्ष अनुमोदित कार्यक्रमों की परिधि में जो भी लक्ष्य निर्धारित किए गए थे, उन्हें अधिकांश मामलों में भिन्न–भिन्न प्रभागों ने प्राप्तकर लिया।

वर्ष 1999–2000 के दौरान प्रत्येक प्रभाग द्वारा किए गए कार्यकलायों का ब्यौरा आगे के पृष्ठों में दिया गया है।

कलानिधि

(पुस्तकालय, सूचना प्रणालियों, सांस्कृतिक अभिलेखागार का प्रभाग)

कलानिधि प्रभाग के मुख्य घटक है : एक उत्कृष्ट संदर्भ पुस्तकालय और सूचना प्रणालियों तथा मल्टीमीडिया डेटाबेस की सुविधाओं के साथ सांस्कृतिक अभिलेखागार। संदर्भ पुस्तकालय के पास मुद्रित पुस्तकों के अलावा, भारतीय तथा विदेशी स्रोतों प्राप्त माइक्रोफिल्मांकित पांडुलिपियों का अद्वितीय संग्रह है और इसके अभिलेखागार में स्थापत्य, चित्रकला, मूर्तिकला संबंधी फोटोग्राफ, स्लाइडें तथा अन्य वस्तुएं और काफी बड़ी संख्या में ऑडियो/वीडियो रेकार्डिंग तथा अन्य सामग्रियों संगृहीत हैं।

कार्यक्रम क : संदर्भ पुस्तकालय

मुद्रित सामग्री की प्राप्ति

आलोच्य वर्ष में, संदर्भ पुस्तकालय में मुद्रित पुस्तकों के 4562 खंड जोड़े गए। इनमें 2309 खरीदी गई पुस्तकों शामिल है जो विशिष्ट व्यक्तियों तथा संस्थाओं से उपहारस्वरूप मिली है। गत वर्ष प्राप्त हुए, देव मुरारका के विशाल संग्रह को अवाप्ति रजिस्टर में चढ़ा लिया गया है।

इस वर्ष के महत्वपूर्ण दाताओं में से कुछ उल्लेखनीय है : प्रो॰ एस.आर. शर्मा (अलीगढ़), प्रो॰ अच्युत लाल भट्ट (वृन्दावन), श्रीमती पी.एन. जंगलवाला (दिल्ली), पं॰ एस. मुखोपाध्याय (नई दिल्ली), श्री जे. के. बड़ठाकुर और श्री एम. सी. जोशी (नई दिल्ली), मैक्समूलर भवन (नई दिल्ली), ईस्टर्न रोएरिक सोसाइटी (नई दिल्ली), ऋषभदेव फाउंडेशन (नई दिल्ली), फारसी अनुसंधान केन्द्र, ईरान का राजदूतावास (नई दिल्ली), आई.एस.पी.सी. के. (दिल्ली), एनसीटीई (नई दिल्ली), नेहरु स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय (नई दिल्ली), हिन्दुस्तान बुक एजेन्सी (नई दिल्ली), म॰ प॰ आदिवासी लोककला परिषद (भोपाल), भंडारकर शोध संस्थान (पुणे), बरकत ट्रस्ट, लंदन और यूनेस्को।

वर्ष के अंत में, पुस्तकालय में पुस्तक खंडों की संख्या कुल मिलाकर 1,17,691 थी।

पत्र–पत्रिकाएं

पुस्तकालय इस वर्ष भी उन अकादमिक तकनीकी पत्र–पत्रिकाओं का ग्राहक बना जिनका उल्लेख पिछले वर्ष की रिपोर्ट में किया गया था। ऐसी पत्र–पत्रिकाओं की संख्या अब 385 है। ये पत्र–पत्रिकाएं इन विषयों से संबंधित है : मानव विज्ञान, पुरातत्व, स्थापत्य, लोकसाहित्य, इतिहास, मानविकी विषय, पुस्तकालय तथा सूचना विज्ञान, भाषा विज्ञान, साहित्य, सांग्रहालय अध्ययन, संगीत, मुद्राटंकण शास्त्र, प्राच्य अध्ययन, प्रदर्शन ज्ञान, और क्षेत्र अध्ययन।

कैटलॉग कार्य

आलोच्य वर्ष में, 3518 पुस्तक खंडों का वर्गीकरण और कैटलॉग कार्य किया गया और 1601 पुस्तकों के अभिलेख" डेटाबेस में दर्ज किए गए।

अमुद्रित सामग्री के कैटलॉग कार्य के अंतर्गत, 258 ऑडियो कैसेटों को कैटलॉग में दर्ज किया गया। इंडोनेशिया के राष्ट्रीय पुस्तकालय की पांच कुंडलियों (रोल्स) में शामिल की गई, पांडुलिपियों के 50 शीर्षिकों को कैटलॉग में दर्ज किया गया और मूलतः मौलाना आजाद अरबी और फारसी शोध संस्थान, टोंक, राजस्थान की माइक्रोफिल्मांकित पांडुलिपियों के पच्चीस अभिलेखों को "लिबसिस" डेटाबेस में भरा गया।

जिल्दबंदी

आलोच्य वर्ष में, 6000 खंडों की जिल्दबंदी करवाई गई। इस प्रकार जिल्दबंद खंडों की संख्या कुल मिलाकर 57,380 हो गई है।

सेवाएं

माइक्रोफॉर्म

आन्तरिक उत्पादन

प्रतिलिपिकरण

माइक्रोफिल्म कुंडलियों की प्रतिलिपियों तैयार करने का कार्यक्रम सामान्य परिपाटी के अनुसार चलता रहा और उनकी प्रतिकृतियां मूल पांडुलिपियों के मालिकों/अभिरक्षकों को और संदर्भ प्रयोजन के लिए पुस्तकालय को दी जाती रही। तदनुसार, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के आंतरिक उत्पादन दल द्वारा अनेक संस्थाओं के संग्रहों की पांडुलिपियों की कुल मिलाकर 2864 माइक्रोफिल्म कुंडलियों की प्रतिलिपियों तैयार की गई। ये संस्थाएं है:

(1) गवर्नमेंट ओरियंटल मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, चेन्नई,
(2) सरस्वती भवन पुस्तकालय, वाराणसी
(3) भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे
(4) रामकृष्ण मठ, चेन्नई,
(5) तंजावुर महाराजा सरफोजी की सरस्वती महल लाइब्रेरी (टी. एम. एस.एम. एल.), तंजावुर।

माइक्रोफिल्मांकन

वर्ष के दौरान, संदर्भ पुस्तकालय को माइक्रोफिल्मों की कुल मिलाकर 1,330 पॉजिटिव कुंडलियां दी गई। ये माइक्रोफिल्म कुंडलियां इन संस्थाओं में उपलब्ध पांडुलिपियों से संबंधित थी : भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे (1082 कुंडलियों), भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली (5 कुडलियां), तंजावुर महाराजा सरफोजी की सरस्वती महल लाइब्रेरी, तंजावुर (28 कुंडलियां)। इनके अलावा, प्रतिलिपिकृत पॉजिटिव माइक्रोफिल्म की 1454 कुंडलियां भिन्न केन्द्रों को भेजी गई। ये कुंडलियां इन संस्थाओं से संबंधित थी :

भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे (1151 कुंडलियां), रामकृष्ण मठ, चेन्नई (एक कुंडली), सरस्वती भवन पुस्तकालय, वाराणसी (234 कुंडलियां), तंजाबुर (50 कुंडलियां) और ओरियंटल रिसर्च इन्स्टिट्यूट एंड मैन मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, तिरुवनन्तपुरम (18 कुंडलियां)।

रिप्रोग्राफी एकक ने कामरूप अनुसंधान समिति, गुवाहाटी की कुछ चुनी हुई पांडुलिपियों के माइक्रोफिल्मांकन का काम हाथ में लिया। इस कार्य के लिए सचल माइक्रोफिल्मांकन दल को उस केन्द्र में प्रतिनियुक्त किया गया।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के आंतरिक उत्पादन दल ने निम्नलिखित संग्रहों से प्राप्त पांडुलिपियों को नीचे दिए गए ब्यौरे के अनुसार माइक्रोफिल्मांकित किया :

क्र.सं.	परियोजना	पांडुलिपियां की संख्या	पन्नों की संख्या	भाषा/लिपि
1.	कामरूप अनुसंधान समिति, गुवाहाटी	08	पांडु –82 पन्ने – 4,288	संस्कृत/असमिया
		11	पांडु – 62	संस्कृत/तमिल/मराठी
	(इं.गां.रा.क.केन्द्र) नई दिल्ली		पन्ने–7,276	देवनागरी/ग्रंथ/तमिल

विभिन्न केन्द्रों से माइक्रोफिल्म संग्रह

आलोच्य वर्ष के दौरान, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा भिन्न–भिन्न केन्द्रों में इस प्रयोजन के लिए नियोजित भिन्न–भिन्न कार्यालयों के माध्यम से किए गए माइक्रोफिल्मांकन कार्य की प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया गया है।

क्र.स.	परियोजनाएं 1999–2000	पांडुलिपियों / पन्नों की संख्या	लिपियां
1.	ओरियंटल रिसर्च इन्स्टिट्यूट और मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, तिरुवनन्तपुरम्	पांडु–292 पन्ने –47,058	संस्कृत / मलयालम / देवनागरी
2.	गवर्नमेंट मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, चेन्नई	पांडु–5483 पन्ने–1,60,722	संस्कृत / तेलुगु / देवनागरी
3.	सरस्वती भवन पुस्तकालय, वाराणसी	पांडु–5687 पन्ने–1,80,722	संस्कृत / बंगला / देवनागरी
4.	शंकर मठ, कांचीपुरम	पांडु–288 पन्ने–45,221	तमिल / संस्कृत / ग्रंथ देवनागरी
5.	सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान, उज्जैन	पांडु–3627 पन्ने–2,10,394	प्राकृत / देवनागरी / शारदा
6.	राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर	पांडु–5051 पन्ने–35,806	संस्कृत / देवनागरी

स्लाइडें

आलोच्य अवधि के दौरान, 1061 स्लाइडें जो विभिन्न स्रोतों अर्थात् बालिसत्र, भागवत

पुराण, असम, कश्मीर लघु चित्रकारियां, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, अजंता की गुफाएं, राष्ट्रीय संग्रहालय, एसीएसएए संग्रह से गांधी संबंधी मूर्तियां आदि से प्राप्त हुई थीं। अवाप्ति रजिस्टर में चढ़ाई गई। इनके अतिरिक्त, 4 पांडुलिपियों से 38 लघु चित्रकारियां और 15 दुर्लभ पुस्तकों में प्रकाशित 469 चित्र/रेखाचित्र भी छायांकित किए गए। 487 मुख्य प्रविष्टि कैटलॉग कार्ड कंप्यूटरीकृत लिबसिस प्रणाली में भरे गए।

संरक्षण

समाक्षाधीन अवधि में, संरक्षण एकक ने कलाकृतियों, दुलर्भ ग्रंथों, तालपत्रों पर लिखी पांडुलिपियों, माइक्रोफिल्मों और माइक्रोफिल्मों के परिरक्षण का कार्य सम्पन्न किया।

वर्ष 1999–2000 के दौरान, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्येताओं/अधिकारियों और अकादमिक कर्मचारियों को अनेक सुविधाएं, जैसे इंटरनेट, डेलनेट, ई–मेल और डेटा प्रविष्टि संबंधी सहायता दी गई। इसके अलावा, अनेक अकादमिक तथा सचिवालयिक कर्मचारियों को कंप्यूटर पर वर्ड–प्रोसेसिंग और इंटरनेट ब्राउजिंग का प्रशिक्षण दिया गया। इसके अतिरिक्त, प्रलेख छवि अंकन प्रणाली के लिए आवश्यक सहायक यंत्र खरीदा गया। साथ ही 10,017 स्लाइडों का इस अवधि में डिजिटीकरण किया गया।

कार्यक्रम ख : सांस्कृति अभिलेखागार

कलानिधि ग के दो भाग है : श्रव्य–दृश्य एकक और सांस्कृतिक अभिलेखागार।

1. श्रव्य–दृश्य एकक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की घटनाओं तथा गतिविधियों का प्रलेख करता है और वीडियो तथा फिल्म रूप में केन्द्र के कार्यों पर कार्यक्रम प्रस्तुत करता है। यह ऑडियो–वीडियो सामग्री सांस्कृतिक अभिलेखागार की ऑडियो–विज्युअल लाइब्रेरी में रखी जाती है।

2. सांस्कृतिक अभिलेखागार में कलाओं और मानविकी विषयों से संबंधित मौलिक और अनुलिपिक सामग्री और व्यक्तिगत संग्रहों का संग्रहण, परिक्षण और प्रलेखन किया जाता है।

अवाप्ति रजिस्टर में चढ़ाना/कैटलॉग कार्य/डिजिटीकरण/माइक्रोफिल्मांकन

कला तथा स्थापत्य विषयक लांस डेन संग्रह की 15,735 स्लाइडों का कैटलॉग बनाने का कार्य प्रगति पर है, उसका डिजिटीकरण तो किया जा चुका है। कर्नाटक संगीत की एस. नटराजन संग्रह की ऑडियो रेकार्डिंग (363 टेप) को कैटलॉग में दर्ज किया जा चुका है। हरिकथा संग्रह के 25 प्रबंध ग्रंथों के माइक्रोफिल्मांकन का कार्य पहले ही संपन्न किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त, भारत के पूर्वोत्तर प्रदेश तथा शंभुनाथ मित्रा संग्रह के 1382 छाया चित्रों और 1475 निगेटिव चित्रों को अवाप्ति रजिस्टर में दर्ज कर लिया गया है। और उनका कैटलॉग कार्य प्रारंभ किया जा चुका है।

प्रलेखन

आन्तरिक रूप से तैयार किए गए कार्यों में से कुछ हैं कला, साहित्य और संगीत क्षेत्र के सुविख्यात महानुभावों के साथ साक्षात्कार, जिनका ब्यौरा नीचे दिया गया है :

1. डॉ॰ मुल्कराज आनन्द – एक सुप्रसिद्व उपन्यासकार का डॉ॰ कपिला वात्स्यायन द्वारा साक्षात्कार ।

2. श्रीमती सुमतिमुटाटकर–विख्यात शास्त्रीय गायिका का श्रीमती शन्नो खुराना द्वारा साक्षात्कार।

निम्नलिखित प्रलेखन कार्यक्रम प्रारंभ किए जा चुके हैं और उत्पादन की भिन्न–भिन्न अवस्थाओं में हैं:

1. "नटसंकीर्तन" (मणिपुरी लोगों को नृत्य एवं जीवन शैली),

2. "दि पेंटेड ईपिक्स" (महाकाव्य दृश्यों का चित्रण),

3. "मुडियेट्ट एंड कलमेशुत्तु" (देवी मंदिरों में प्रस्तुति),

4. "बानम ऑफ संथाल्स" (संथालों के वाद्य यंत्र),

5. "तेय्यम"

6. "रॉक आर्ट ऑफ उड़ीसा" (संबलपुर की मेसोलिथिक कला,)

7. "कोली डान्सेज ऑफ महाराष्ट्र"

8. "मुख नाच" (उत्तरी बंगाल का मुखौटा नृत्य),

9. "दि लैपविंग हू डिफाइड दि ओशन,

10. "मिरासन्स" (मिरासन के जीवन पर वृत्त चित्र)

11. "केसर सागा" (लद्दाख की मौखिक परंपराएं),

12. "बानो बेगम" (एक विख्यात गायिका)

प्राप्ति/अर्जन

आलोच्य वर्ष में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अभिलेखागार के लिए निम्नलिखित प्रलेखन–फिल्में प्राप्त की गई :

1. "तेय्यम"

2. "दि मिथ ऑफ दि क्लैश ऑफ सिविलाइजेशनन्स", एडवर्ड सइद द्वारा,

3. "ऑन ओरियंटलिज्म", एडवर्ड सइद द्वारा,

4. "विष्णुपुर टेम्पल",

5. "दि ऑफिशल आर्ट फोर्म",

6. "बेंगाल रिनेसां,

7. "डोंगरी भील्स"।

मुक्तेश्वर मंदिर और विश्व के सीडी–रोम के लिए संगाष्ठियों, व्याख्यानों और टीका–टिप्पणियों की ऑडियो की ऑडियो रिकार्डिंग तैयार की जा चुकी है। उस्ताद फहीमुद्दीन डागर के ध्रुपद शैली के गायन के 10 घंटे के कार्यक्रम को रेकार्ड किया गया। महाभारत की कथाओं की प्रसिद्ध चित्रकार संतोखबा के गुजराती संस्करण का कार्य पूरा हो चुका है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कार्यक्रमों की फिल्मों का प्रदर्शन एवं प्रसारण

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कार्यक्रमों की फिल्में बाल भवन, आई आई सी और स्वयं में भी नियमित रूप से जनता को दिखाई जाती है। केन्द्र दूरदर्शन के समाचार चैनल के लिए समाचार देता रहता है। केन्द्र के व्याख्यानों, प्रदर्शनियों और कार्यकलापों को समाचार पत्रिकाओं में बराबर स्थान मिलता है। केन्द्र के कार्यक्रम "सैक्रेड वर्ल्ड ऑफ टोडाज" को दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल में शैक्षिक कार्यक्रम के अंतर्गत प्रसारित किया गया।

दूरदर्शन के ज्ञानदर्शन चैनल ने जनवरी, 2000 में प्रसारण प्रारंभ किया। केन्द्र इस चैनल को अपने कार्यक्रम प्रदान करता है।

जगद्गुरु शंकरचार्य के विषय में केन्द्र के अभिलेखागार से दुर्लभ फिल्म (फूटेज) को जगद्गुरु शंकराचार्य विषयक वेबसाइट "श्री कांची कामकोटि पीठम डब्लू डब्लू कामकोटि ऑर्ग" में शामिल किया गया।

कलाकोश

(अनुसंधान और प्रकाशन तथा क्षेत्र अध्ययन प्रभाग)

कलाकोश प्रभाग कलाओं से जुड़ी बौद्धिक तथा पाठ्य परम्पराओं का उनके बहुस्तरीय एवं विविधविद्यापरक संदर्भों में अनुसंधान करता है। केन्द्र के मुख्य अनुसंधान तथा प्रकाशन स्कंध के रूप में कार्य करते हुए यह शास्त्र को मौलिक के साथ, दृश्य को श्रव्य के साथ और सिद्धान्त पक्ष को व्यवहार पक्ष के साथ जोड़ते हुए, कलाओं को एक सांस्कृतिक प्रणाली के समग्र ढांचे के भीतर स्थापित करने का प्रयास करता है।

इन उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए इस प्रभाग ने (क) उन मूल अवधारणाओं का पता लगाया है, जो समग्र भारतीय चिन्तन की मूलाधार है और जो सभी विषयों/शास्त्रों तथा जीवन के आयामों में व्याप्त है : (ख) मूल ग्रंथों को स्रोत सामग्री को जो अब तक अज्ञात, अप्रकाशित और अप्राप्य थी, अनुवाद के साथ मूल भाषा में प्रकाशित करने के लिए निर्धारित किया जाता है : (ग) उन विद्वानों तथा विशेषज्ञों की कृतियों के प्रकाशन को योजना बनाई है जो उपने ही समग्रवादी दृष्टिकोण के माध्यम से अन्तर–सांस्कृतिक पद्धति तथा विश्वविद्यायरक नीति के साथ कलात्मक परम्पराओं को समझने में अग्रणी रहे हैं : और (घ) एक विशेष परियोजना के अंतर्गत एक 21–खंडीय विश्वकोश के निर्माण को कार्यक्रम प्रारम्भ करने के लिए योजना का प्रारूप तैयार किया है।

प्रभाग के कार्यक्रमों को मुख्य रूप से इन बड़ी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :–

क. कलातत्त्वकोश : आधारभूत अवधारणाओं को कोश और पारिभाषिक शब्दावलियां।

ख. कलामूलशास्त्र : उन आधारभूत ग्रंथों की श्रृंखला, जो भारतीय कलात्मक परंपराओं की बुनियाद है और मूल ग्रंथ जो किसी कला–विशेष से संबंधित है।

ग. कलासमालोचन : समीक्षात्मक पाण्डित्य तथा अनुसंधान को ग्रंथमाला और

घ. कलाओं के रूपक : (1) भारतीय कलाओं की रूपकों पर एक बहुखंडीय परियोजना और

(2) भारत को मुद्रांकन कलाओं पर एक परियोजना।

ङ. क्षेत्र अध्ययन : (क) दक्षिण–पूर्व एशिया अध्ययन,

(ख) पूर्व एशिया अध्ययन,

(ग) स्लाविक तथा मध्यएशिया अध्ययन।

कार्यक्रम क : कलातत्त्वकोश

(भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं/संकल्पनाओं का कोश)

कलाकोश प्रभाग का पहला कार्यक्रम भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं का कोष तैयार करने का है। मूर्धन्य विद्वानों के परामर्श से ऐसे लगभग 250 पारिभाषिक शब्दों की सूची तैयार की गई है जो अनेक शास्त्रों के मूल ग्रंथों में व्यवहृत हुए हैं और जिनका बीज कलाओं में दृष्टिगोचर होता है। प्रत्येक अवधारणा का अनुसंधान अनेक शास्त्रों के मूल ग्रंथों के माध्यम से किया जाता है जिससे एक पारिभाषिक शब्द को चुना जा सके जिसका एक मुख्य अर्थ और व्यापक स्वरूप हो, लेकिन कालान्तर में उसी शब्द के अनेक अर्थ विकसित हो गए हों। ऐसे संकलन, विश्लेषण तथा पुनः एकत्रीकरण के द्वारा भारतीय परंपरा की मूलभूत एकता और उसके अनिवार्य अन्योन्याश्रय शास्त्रपरक स्वरूप का पुनर्निर्माण किया जा सकेगा। जैसा कि इससे पूर्व के प्रतिवेदन में बताया गया है, कलातत्त्वकोश का प्रथम खंड 1988 में प्रकाशित किया जा चुका है। इनमें आठ पारिभाषिक शब्दों का विवेचन किया गया है। इसका द्वितीय खंड जो दिक् तथा काल से संबंधित 16 पारिभाषिक शब्दों के बारे में है, मार्च, 1992 में प्रकाशित किया गया। इस कोश का तीसरा खंड वर्ष 1997 में प्रकाशित किया गया। इसमें मूल तत्त्वों अर्थात् महाभूतों के विषय में आठ पारिभाषिक शब्दों पर लेख हैं। गत वर्ष (1998–99) के दौरान, कलातत्त्वकोश के चतुर्थ खंड–सृष्टि विस्तार : प्रकृति की अभिव्यक्ति का विमोचन किया गया और वह 14 दिसंबर, 1998 को भारत के महामहिम राष्ट्रपति के करकमलों में अर्पित किया गया। इस खंड में विभिन्न शब्दों : इन्दिरा द्रव्य धातु, "गुण–दोष", अधिभूत–अधिदैव–अध्यात्म", "स्थूल–सूक्ष्म–पर" और "सृष्टि–स्थिति–प्रलय" पर सात लेख हैं।

आलोच्य अवधि में, कलातत्त्वकोश के प्रथम खण्ड संशोधित संस्करण मुद्रणाधीन था और पंचम खण्ड के निबंधों के सम्पादन को कार्य तीव्र गति से चल रहा था।

कार्यक्रम ख : कलामूलशास्त्र

(कलाओं से संबंधित आधारभूत ग्रंथों की श्रृंखला)

कलाकोश प्रभाग का दूसरा दीर्घकालिक कार्यक्रम है– वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला से लेकर संगीत, नृत्य, नाट्य आदि तक की भारतीय कलाओं से संबंधित आधारभूत ग्रंथों को पता लगाना और उनका समालोचनात्मक सम्पादन करके टीका प्रकाशित करना।

वर्ष 1988–89 में कुछ प्रकाशनों के विमाचन के साथ इस कार्यक्रम का प्रारंभ करते हुए इस प्रभाग ने कलामूलशास्त्र की ग्रंथमाला के अंतर्गत मार्च, 1998 तक कुल मिलकर 23 ग्रंथ प्रकाशित किए थे।

गत वर्ष 1998–99 के दौरान जो ग्रंथ प्रकाशित किए गए वे हैं : नर्तननिर्णय (तृतीय खंड) जो संस्कृत में भारतीय संगीत तथा नृत्य विषयक असाधारण मौलिक ग्रंथ है, और उसका सम्पादन तथा अनुवाद प्रो आर. सत्यनारायण ने किया और लाट्यायन श्रौत सूत्र भी (तीन खण्डों में) प्रकाशित किया गया है। लाट्यायन श्रौत सूत्र सामवेद की कौथुमशाखा से संबंधित है। यह पूजा–पद्धति और मंत्रोच्चार विषयक पाठ के लिए प्रमुख रूप से प्रसिद्ध है और मुख्यतः सोमयागों से संबंधित है। इसके अतिरिक्त, संगीतोपनिषत्सारोद्धार जो कि 1350 में लिखित एक महत्वपूर्ण मध्ययुगीन संस्कृत ग्रंथ है और संगीतशास्त्र की एक विशिष्ट पश्चिम भारतीय और जैन धारा का प्रतिनिधित्व करता है, भी प्रकाशित किया गया। डॉ॰ एलिन माइनर ने इस ग्रंथ का सम्पादन तथा अनुवाद किया है। इस वर्ष काण्वशतपथ ब्राह्मण का तीसरा खंड मुद्रित किया गया, इस खण्ड में चतुर्थ तथा पंचम काण्ड समाहित हैं।

आशा की जाती है कि निम्नलिखित सात कृतियां दिसंबर, 2000 के अंत तक प्रकाशित कर दी जाएंगी :–

1. चतुर्दण्डी प्रकाशिका : संपादक एवं अनुवादक प्रो॰ आर. सत्यनारायण,

2. पुष्प–सूत्र खण्ड–1 व 2 : संपादक एवं अनुवादक प्रो॰ जी.एच. तरलेकर,

3. ईश्वर संहिता खंड–1 : संपादक एवं अनुवादक डॉ॰ लक्ष्मी ताताचार,

4. संगीत मकरन्द : संपादक एवं अनुवादक डॉ॰ एम. विजयलक्ष्मी,

5. काण्व शतपथ ब्राह्मण खंड–4 : संपादक एवं अनुवादक डॉ॰ सी.आर. स्वामिनाथन,

6. बौधायन श्रौत सूत्र खंड–1 : संपादक एवं अनुवादक प्रो॰ सी.जी. काशिकर,

7. चित्रसूत्र ऑफ विष्णुधर्मोत्तरपुराण : संपादक एवं अनुवादक डॉ॰ पारूल दवे मुखर्जी।

अन्य कई ग्रंथों से संबंधित कार्य तैयारी की भिन्न–भिन्न अवस्थाओं में चल रहा है।

कार्यक्रम ग : कला समालोचन

कलासमालोचन ग्रंथमाला के अंतर्गत ऐसे ग्रंथ प्रकाशित किए जाते हैं जिनमें कलाओं तथा सौन्दर्यशास्त्र के विभिन्न पक्षों पर समालोचनात्मक सामग्री समाविष्ट हो। इस शृंखला के एक भाग के अंतर्गत ऐसे विख्यात विद्वानों की कृतियों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है जिन्होंने आधारभूत संकल्पनाओं का विस्तारपूर्वक निरूपण किया है, चिरस्थायी स्रोतों का पता लगाया है और नानाविध परंपराओं के बीच संपर्क–सेतुओं का निर्माण किया है। अक्सर उनकी कृतियां सुलभ नहीं होतीं, कारण यह होता है कि या तो उनकी सभी मुद्रित प्रतियां बिक चुकी होती हैं, अथवा अंग्रेजी में उपलब्ध नहीं होती।

कलासमालोचन ग्रंथमाला के अंतर्गत, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने ऐसे कुछ अमूल्य योगदानों को साधारण मूल्य वाले प्रकाशनों के माध्यम से उजागर करने का प्रयास किया है। आमतौर पर, कुछ चने हुए लेखकों की चुनी हुई कृतियां के संशोधित तथा विषयनुसार पुनः व्यवस्थित संस्करण और अनुवाद इस ग्रंथमाला में प्रकाशित किए जाते हैं।

गत वर्ष, "बाराबुदर" लेखक पॉल मूस और "हिन्दुइज्म एण्ड बुद्धिज्म", लेखक : आनन्द के. कुमार स्वामी, 14 दिसंबर, 1998 को विमोचित और भारत के महामहित राष्ट्रपति को भेंट की गई थी। आलोच्य अवधि में, दो अन्य पुस्तकें "इन फेवर ऑफ गोविन्द देव जी" और "बारोक इण्डिया" प्रकाशित की गई हैं।

निम्नलिखित पुस्तकें मुद्रण तथा संपादन की भिन्न–भिन्न अवस्थाओं में है :–

1. जैन टेम्पल्स ऑफ दिलवाड़ा एंड रणकपुर : लेखक प्रो॰ सहदेव कुमार,
2. आईकॉनोग्राफी ऑफ बुद्धिस्त स्कल्पचर ऑफ उड़ीसा : लेखक थोमस डोनाल्डसन
3. सिलेक्टिड राइटिंग्स ऑफ प्रो॰ जी॰ डी॰ सॉन्थीमर, खण्ड–2,
4. दि सिटी एंड दि स्टार्स (संगोष्ठी का कार्यविवरण),

कार्यक्रम घ : भारतीय कलाओं के रूपक

(एक पंचखंडीय शोध परियोजना के रूप में अवधारित)

भारतीय कलाओं के रूपक

"भारतीय कलाओं के रूपक" कोश एक बहुखंडीय परियोजना है जिसमें कुछ बीजभूत रूपकों, जैसे "बीज", "पुरुष", "स्कंभ" "बिन्दु" "शून्य" आदि पर शोधकार्य समाहित होगा। इस परियोजना के अंतर्गत इसके "बीज" विषयक प्रथम खंड के लिए संगृहीत सामग्री का संपादन कार्य प्रारंभ किया जा चुका है। "पुरुष" विषयक अगले खंड के लिए सामग्री संकलित की जा रही है।

1. (क) भारतीय कलाओं के रूपक विषयक पंचखण्डीय कृति : इसका "बीज" विषयक प्रथम खंड पिछले वर्ष संकलित और संशोधित किया गया था। "पुरुष" विषयक दूसरा खंड समापन की अंतिम अवस्थाओं में है।

(ख) ग्लोसरी ऑफ की आर्ट टर्म्स : पांडुलिपि का संपादकीय संशोधन हो रहा है।

कार्यशाला :

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा "पुरालिपिशास्त्र और पांडुलिपि विज्ञान" विषय पर छठी कार्यशाला पुणे विश्वविद्यालय के संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग के सहयोग से, पुणे में 31 से 31 दिसंबर, 1999 तक आयोजित की गई। इस कार्यशाला का उद्देश्य युवापीढ़ी के संस्कृत अध्येताओं को संस्कृत तथा प्राकृत पांडुलिपियों का पढ़ने, उनका अर्थ निकालने और उनके समालोचनात्मक संस्करण निकालने की विधि का प्रशिक्षण देना था। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अनुसंधानकर्ताओं सहित, विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयों से आए तेईस युवा अध्येताओं ने इस कार्यशाला में भाग लिया। इनके अतिरिक्त, दस मूर्धन्य संस्कृत विद्वानों ने इस कार्यशाला में विशेषज्ञों के रूप में सहयोग दिया। कार्यशाला के सफलतापूर्वक संपन्न हो जाने बाद, तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे के उप–कुलपति ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण–पत्र प्रदान किए। कार्यशाला अन्यंत सफल रही और युवा अध्येताओं के लिए वरदान सिद्ध हुई।

कार्यक्रम ड. : क्षेत्र अध्ययन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्ययन कार्यक्रम के अंतर्गत, कलाकोश प्रभाग कुछ ऐसे विशिष्ट क्षेत्रों जैसे दक्षिणपूर्व एशिया, पूर्व एशिया, मध्य एशिया आदि पर ध्यान केन्द्रित करता है, जिनके साथ भारत के घनिष्ठ एवं सक्रिय संबंध रहे हैं। इस क्षेत्र में 1999–2000 के दौरान हुई प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया गया है।

पूर्व एशिया अध्ययन

पूर्व एशिया कार्यक्रम के अंतर्गत दो प्रकार के कार्य किए जाते हैं। एक ओर इसमें अनुसंधान एवं प्रकाशन का कार्य किया जाता है तो दूसरी ओर यह चीन (चीनी संस्थाओं तथा विद्वानों सहित) और पूर्व एशिया के अन्य देशों के प्रति खिड़की का काम करता है। वर्ष 1999–2000 के दौरान इस क्षेत्र में किए गए कार्यकलापों का संक्षिप्त ब्यौरा नीचे दिया गया है :–

1. दुनहुआंग अकादमी, गानसु, चीन।

2. चीन की सामाजिक विज्ञान अकादमी, पेइचिंग।

3. युनहान स्थित सामाजिक विज्ञान अकादमी, युनहान।

4. एशियाई अध्ययन केन्द्र, हांगकांग विश्वविद्यालय।

इस एकक द्वारा निम्नलिखित प्रकाशन निकाले गए :–

1. क्रॉनोलजी ऑफ इंडिया–चाइना इंटरफेस", पेइचिंग विश्वविद्यालय के प्रो॰ गेंग चिन जेंग के सहयोग से लिखी गई ।

2. "आइकॉनोग्राफिक नोवल्टीज एंड पिक्यूलियारिटीज एलांग दि नदर्न सिल्क रूट (ईसा की दूसरी शताब्दी से 10वीं शताब्दी तक)

3. मध्य एशियाई कला एवं संस्कृति विषय पर एक विस्तृत ग्रंथ सूची (पत्रिकाओं सहित लगभग (200 प्रकाशन) तैयार की गई।

4. "जातक्स, अवदान्स एंड पॉपुलर स्टोरीज फ्रॉम दुनहुआंग" (मध्य एशिया और दुनहुआंग में चित्रित 150 जातकों की सूची)।

दक्षिण–पूर्व एशिया अध्ययन

दक्षिण–पूर्व एशिया विषय के मूर्धन्य विद्वान (स्व॰) प्रा॰ एच.बी. सरकार द्वारा दक्षिण–पूर्व एशिया के इतिहास और संस्कृति पर लिखे गए शोध–पत्रों के संकलन के लिए अंतिम रूप दिया जा चुका है।

"भारत–थाई कला" विषय पर एक संगोष्ठी 30 मार्च, 1999 को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आयोजित की गई। इस संगोष्ठी का उद्घाटन भारतीय संस्कृति की अंतर्राष्ट्रीय अकादमी, नई दिल्ली के अध्यक्ष, प्रो॰ लोकेश चन्द्र ने किया। भारत तथा थाई–लैंड से आए 40 कलाविदों ने इसमें भाग लिया।

"ग्लिंप्सेज ऑफ अर्ली इंडो–इंडोनेशियन कल्चर : कलक्टिड पेपर्स ऑफ एच.बी. सरकार" नामक प्रकाशन के अंतिम प्रूफ सूचक सहित प्रकाशक को भेजे जा चुके हैं। यह पुस्तक, आशा है, जुलाई 2000 के अंत तक प्रकाशित हो जाएगी।

स्लाविक तथा मध्य एशिया अध्ययन

इस एकक स्थापना मध्य एशिया (रूस) तथा भारत के बीच ऐतिहासिक अन्योन्य क्रियाओं तथा प्रभावों का अध्ययन करने के लिए की गई थी। यह एकक इस विषय पर भारत के बाहर से महत्वपूर्ण अनुसंधान तथा संदर्भ सामग्री इकट्ठी करने के लिए प्रयत्नशील रहा है।

सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को "इनियन" मास्को के साथ एक समझौता हो चुका है जिसके अंतर्गत केन्द्र इनियन से

शोध–सामग्री की माइक्रोफिशें मंगवा सकता है। इनियन रूस की विज्ञान अकादमी का वैज्ञानिक सूचना संस्थान है और उसका पुस्तकालय अकादमी का पुस्तकालय है, जोकि माइक्रोफिशों का विश्वविख्यात भंडार हैं।

इस सहयोग के अंतर्गत इनियन से 307 माइक्रोफिशें प्राप्त हुई। इस कार्य की गति इस वर्ष सामान्य की तुलना में कुछ धीमी रही है क्योंकि इनियन के लिए मास्को में संस्थागत तथा वित्तीय कठिनाइयां रही है।

विदेश मंत्रालय ने एक कार्यक्रम प्रारंभ किया है जिसके अंतर्गत ताशकन्द के ऐतिहासिक अभिलेखागार से अपेक्षित सामग्री की प्रतिलिपियां तैयार करके इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को भेंट की जाती हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सामग्री का चुनाव करने के लिए प्रो॰ माधवन के पालत ने मार्च 1999 में विदेश मंत्रालय के व्यय पर ताशकन्द यात्रा की।

जनपद–सम्पदा

(क्षेत्रीय संस्कृतियों के संबंध में जीवन शैली अध्ययन तथा अनुसंधान करने वाला प्रभाग)

जनपद–सम्पदा प्रभाग कलाकोश प्रभाग के कार्यक्रमों के पूरक के रूप में कार्य करता है। इसका ध्यान शास्त्र के बजाय लघुस्तरीय संसक्त समाजों की समृद्ध और विविध रूप–रंगों में उपलब्ध धरोहर की कलात्मक अभिव्यक्तियों पर केन्द्रित रहता है। बीच–बीच में अनेक छोटे–बड़े सांस्कृतिक आन्दोलनों से गुजरते हुए इन संस्कृति के क्षेत्र में निरंतरता एवं परिवर्तनशीलता बराबर बनाए रखी है, जिसके फलस्वरूप अधिक कठोर, निर्जीव, गतिहीन तथा संहिताबद्ध परंपराओं को जिन्हें "शास्त्रीय" कहा जाता है, अपने कायाकल्प के लिए प्रेरणा मिलती रही है और इस प्रकार सम्पदा प्रभाग के अनुसंधान कार्यकलापों का उद्देश्य इन कलाओं को उनके पारिभाषिक सांस्कृतिक, सामाजिक–आर्थिक संदर्भों में पुनः स्थापित करना है। दैनन्दिन जीवन से जुड़े लोकप्रिय भारतीय शब्द, जैसे "जन", "लोक", "देश", "लौकिक", "मौखिक", कार्यक्रम तैयार करने के मामले में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं।

इस प्रभाग के कार्यक्रमों को विभाजन इस प्रकार है :–

(क) **मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह :** इन संग्रहों में मूल, अनुकृतियां तथा रिप्रोग्राफिक प्रतिलिपियां बुनियादी स्रोत सामग्री के रूप में एकत्र की जाती है।

(ख) **बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा गतिविधियां :** इन कार्यक्रमों के अंतर्गत दो दीर्घाओं की स्थापना की जा रही हैं : (1) आदि–दृश्य, जिसमें भारत तथा अन्य देशों की पूर्व–ऐतिहासिक शैल कला और (2) आदि–श्रव्य जिसमें संगीत एवं संगीतेतर ध्वनि की अभिव्यक्ति होगी। दूसरे शब्दों में दृष्टि तथा ध्वनि की ज्ञानेन्द्रियों आंख एवं कान से संबंधित आधारभूत संकल्पनाएं प्रस्तुत की जाएंगी।

(ग) **जीवन शैली अध्ययन :** ये कार्यक्रम (1) लोक परंपरा और (2) क्षेत्र सम्पदा नामक दो भागों में बंटे हैं। लोक परंपरा के अंतर्गत, भारत के भिन्न–भिन्न आर्थिक क्षेत्रों में मनुष्य की जीवन शैलियों का अध्ययन किया जाता है। क्षेत्र सम्पदा के अंतर्गत विशेष स्थानों पर मंदिर परिसरों के ऐसे अध्ययन की कल्पना की गई है जिसमें उनके भक्ति विषयक, कलात्मक, भौगोलिक और सामाजिक पक्षों को परस्पर जोड़ने वाली प्रक्रिया को भी ध्यान में रखा जाता है।

(घ) **यूनेस्को चेयर :** सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र में एक यूनस्को चेयर (प्रपीठ) इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में सन 1994 में स्थापित की गई। इस समय यह प्रपीठ "सांस्कृतिक विरासत की पहचान और वृद्धिः विकास के प्रबंध में एक आंतरिक आवश्यकता" विषय के अध्ययन में संलग्न है।

वर्ष 1999–2000 में जनपद सम्पदा विभाग के द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों में की गई प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया गया है :

कार्यक्रम क : मानवजाति वर्णानात्मक संग्रह

प्राप्ति/अर्जन :

महिलाओं के दैनिक जीवन और उनकी जीवन शैली में उनकी सर्जनात्मकता के कार्यक्रम के अंतर्गत, गुजरात, कर्नाटक पंजाब और हरियाणा से कसीदाकारी की वस्तुएं प्राप्त की गई।

फिल्में :

श्री आर. के. द्विवेदी द्वारा "मुखनाच" विषय पर एक फिल्म तैयार की जा रही है।

प्रकाशन :

"मन, मानव और मुखौटा" विषयक संगाष्ठी के शोध–पत्रों के प्रकाशन का कार्य प्रगति पर है।

कार्यक्रम ख : बहु–माध्यमिक प्रस्तुतियां और गतिविधियां :

आदिदृश्यः

इस कार्यक्रम के अंतर्गत डॉ॰ बंसीलाल मल्ला, फ्रांस में सेंट सोजी स्थित अनुसंधान संस्थान के निदेशक प्रा॰ माइकेल लॉरब्लांशे के निमंत्रण पर, दक्षिणी फ्रांस के प्रागैतिहासिक शैल–कला स्थलों का अध्ययन करने कि लिए 10 नवंबर से 2 दिसंबर 1999 तक फ्रांस के दौरे पर रहे। उन्होंने वहां कर्सी क्षेत्र की कौनाक, गार्गस, पेच मर्ले, निऑक्स और ली मरविली (रोकामदूर के पास) आदि गुफाओं का दौरा किया। मेरी गोर्ड क्षेत्र में उन्होंने जिन स्थलों का अध्ययन किया उनमें लैस ऑक्स 1 लैस ऑक्स 2 (प्रतिकृति), खफीनाक, फॉन्ट–डी–गौम, कॉम्बरेलास और कैंप ब्लाक शेल्टर शामिल थीं।

शैल कला के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच और आगे सहयोग की संभावना का पता लगाया गया। ब्यौरेवार दौरा रिपोर्ट प्रस्तुत की जा चुकी है।

प्रकाशन :

"भूमंडलीय शैल कला" सम्मेलन के शोध पत्रों के प्रकाशन का कार्य प्रगति पर हैं।

गतिविधियां :

पंचतंत्र की कहानियों पर आधारित बच्चों की चित्रकारियों की एक प्रदर्शनी बाल भवन, नई दिल्ली के सहयोग से 31 सितंबर से 5 अक्टूबर, 1999 तक आयोजित की गई।

प्रो. निर्मल कुमार बोस स्मारकीय व्याख्यान (22 और 23 मार्च, 2000 को) संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रो. टी. एन. पाण्डे द्वारा (क) भारत की

जनजातियों के विषय में प्रोफेसर बोस के विचार और (ख) हिमालय की तराई के थारु लोगों के देवी–देवता विषय पर दिया गया। प्रो. बी.के. राय बर्मन ने आयोजन की अध्यक्षता की।

कार्यक्रम ग : जीवन शैली अध्ययन
(लोक परम्परा)

अब तक लोक परंपराओं और उनसे संबंधित संस्कृतियों पर जो भी अनुसंधान/अध्ययन हुआ है वह सब अधिकतर एक ही दिशा में और एकांगी ही हुआ है, चाहे वह मानवशास्त्रीय दृष्टि से किया गया हो अथवा समाज विज्ञान, अर्थशास्त्र सामाजिक, राजतीतिक–इतिहास या कला इतिहास की दृष्टि से। इन विषयों ने जीवन अनुभव के कुछ अंगों या कुछ आयामों का ही ध्यान रखा हैं, जीवन अनुभव की संपूर्णता का नहीं। जनपद संपदा प्रभाग एक नया दृष्टिकोण, एक नई पद्धति अपनाना चाहता है, और वर्तमान पद्धतियों की जाँच करके जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक मॉडल तैयार करने का प्रसास कर रहा है। यह दृष्टिकोण इस धारणा पर आधारित है कि जीवन अलग–अलग आयामों या इकाइयों में बंटा हुआ नहीं है और न ही कोई एक मॉडल किसी समुदाय के सांस्कृतिक जीवन की संपूर्ण झांकी प्रस्तुत कर सकता है। यह दृष्टिकोण संस्कृति को एक सीमांकित या सुनिश्चित स्थान में बहु–आयामी प्रणाली मानता है।

इन अध्ययनों का उद्देश्य प्राकृतिक परिवेश, दैनिक जनजीवन, वार्षिक पंचांग तथा जीवन चक्र, विश्व दृष्टिकोण, ब्रह्मांड विज्ञान, खेती तथा अन्य आर्थिक कार्य, सामाजिक संरचना, ज्ञान व कौशल, पारंपरिक प्रौद्यौगिकी और कला अभिव्यक्तियों के बीच कई प्रकार के संबंध जोड़ना है। ये अध्ययन स्वरूप में बहुविषयक हैं और कलाओं के क्षेत्र में कौशलों और तकनीकों के अन्योन्याश्रय, भिन्न–भिन्न क्षेत्रों पर एक दूसरे के असर और जनजातीय, ग्रामीण तथा शहरी परंपराओं, मौखिक या लिखित के पारस्परिक प्रभाव को प्रकट करते हैं।

उपर्युक्त लक्ष्यों को सामने रखकर और बहुविषयक रीति अपनाते हुए कई प्रायोजित

परियोजनायें प्रारंभ की गई हैं। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विद्वान देश की विभिन्न संस्थाओं से लिए गए बहुविषयक अध्ययन दलों के साथ सहयोग एवं समन्वय स्थापित कर रहें है। उन लोगों के साथ एक सार्थक संवाद स्थापित किया गया है जो जातीय वनस्पति विज्ञान, जातीय इतिहास, हिमालय परिशीलन, मौखिक परंपराओं के क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं।

उपर्युक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, लोक परंपराओं की प्रायोगिक परियोजनाओं के कार्यक्रम ने वर्ष के दौरान प्रगति की है, जिसका ब्यौरा नीचे दिया गया है :–

सहयोगात्मक परियोजनाएँ

निम्नलिखित परियोजनाएं जो अन्य संस्थाओं के सहयोग से पिछले वर्षो में प्रारंभ की गई थीं अब पूरी की जा चुकी हैं :–

1. संथाल साहित्य की सटिप्पणीक ग्रंथ सूची : डॉ॰ एस.एस. महापात्र द्वारा।
2. कुमाऊं के कत्यूरी एवं चंदकालीन वीर स्मारक : कु॰ शीला देवी द्वारा।
3. गालो के वंशपरंपरागत अवशेष : श्री टी. पांडु द्वारा।
4. चिलिका : झील और उसकी ब्रह्मांडिकी : डॉ॰ एस.एस. पटनायक द्वारा।
5. मणिपुर के मिट्टी के बर्तन : डॉ॰ के. सविता देवी द्वारा।
6. रोगहारी मंत्र : श्री डेसमाण्ड एल. कर्मोफ्लांग द्वारा।

सहयोगात्मक परियोजनाएं, जो प्रगति पर है :

1. जलीय ब्रह्मांड विज्ञान और जन–संस्कृति : भारतीय सभ्यता का मानव वैज्ञानिक अध्ययन", डॉ॰ गोविन्द चन्द्र रथ द्वारा।

2. मैतेई परिवार–पारंपरिकता से आधुनिकता में रुपांतरण की प्रतिक्रिया" : डॉ॰ निंगोमबन बसन्त द्वारा।

3. "संथाल परगना से संगृहीत संस्थाल साहित्य की सटिप्पणीक ग्रंथ सूची" (तृतीय चरण) : प्रो. एस.एस. महापात्र द्वारा।

4. मैतेई लोगों के तिथ्यनुसार धार्मिक अनुष्ठान एवं कर्मकांड : श्री एन. देवेन्द्र सिंह द्वारा।

आंतरिक परियोजनाएं

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के द्वारा हाथ में ली गई निम्नलिखित आंतरिक परियोजनाओं का कार्य वर्ष 1999–2000 में प्रगति पर रहा :

1. "भरमौर, चम्बा (हिमालय प्रदेश) के गद्दी लोगों में दिक् और काल की सांस्कृतिक श्रेणियां", विषय पर एक प्रबंध ग्रंथ डॉ॰ मौलि कौशल द्वारा तैयार किया जा रहा है।

2. "शरीर, गर्भाशय तथा बीज के बारे में संथालों का बोध," नामक शब्द कोश डॉ॰ नीता माथुर द्वारा तैयार किया जा रहा है।

3. "गढवाल हिमालय के स्थानीय लोक रंगमंच के प्रतिपादक के रूप में पाण्डव नृत्य शैली और अंग्रेजी अवांगार्दे थियेटर : एक तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर कु॰ ऋचा नेगी का पी. एच.डी. थीसिस गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्री नगर, गढ़वाल को प्रस्तुत किया जा चुका है।

4. "मिथिला के लोक–गीतों की संरचना और बोध : संगीत के मानवज्ञान का विश्लेषणात्मक बध्ययन" शीर्षक पी.एच.डी. परियोजना के अंतर्गत, श्री कैलाशकुमार मिश्र ने एक सौ अठत्तर (178) लोक–गीतों को प्रलेखबद्व किया है और उनमें से लगभग पचपन (55) लोक–गीतों को लिप्यंतरण किया जा चुका है।

संगोष्ठियां

"हिन्दी राजभाषा और शास्त्र" विषय पर एक गोष्ठी हिन्दी दिवस के अवसर पर 14 सितंबर, 1999 को आयोजित की गई। "राष्ट्रीय जीवन में संस्कृति का स्थान विषय में महात्मा और कवि : गांधी और टैगोर के विचार" विषय पर एक दो–दिवसीय विशेष व्याख्यान दिनांक 17 और 18 जनवरी, 2000 को प्रो॰ सव्यसाची भट्टाचार्य द्वारा दिया गया। इस व्याख्यान को उद्देश्य सामान्य रूप से इस विवेचनात्मक विषय की ओर विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करना और 20वीं शताब्दी के दो महान चिन्तकों को श्रद्वांजलि अर्पित करना था।

प्रकाशन :

वर्ष के दौरान निम्नलिखित निकाले गए :

(1) कल्चर ऑफ पीस : संपादक : प्रो॰ बी.एन. सरस्वती।

(2) विहंगम (इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का समाचार पत्र खंड–6 और खंड–7)

प्रकाशन, जिनका कार्य प्रगति पर है :–

1. प्लेस नेम्स इन कश्मीर, बी. के. रैना और एस.एल. साधु द्वारा,
2. लद्दाख की लोक संस्कृति, प्रेम सिंह जिना द्वारा,
3. संथाल वर्ल्डव्यू (विश्व दृष्टि) विषय पर हुई संगोष्ठी के शोध–पत्र
4. कथावाचन और कथावचक विषय पर हुई संगोष्ठी के शोध–पत्र
5. वॉयस ऑफ दि सैक्रिड इन अवर टाइम्स" विषय पर हुई संगोष्ठी के शोध–पत्र,
6. "परम्परा और व्यक्ति" विषय पर हुई संगोष्ठी के शोध–पत्र।

क्षेत्र–सम्पदा (प्रादेशिक धरोहर)

कतिपय प्रदेशी/क्षेत्र समय के साथ–साथ सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में विकसित होते गए हैं और उनसे आकर्षित होकर संसार के सभी भागों से लोग वहाँ आते रहें है। वे सम्पर्क एवं आवागमन के मुख्य केन्द्र रहे हैं।

अक्सर कोई मंदिर या मस्जिद वहां के भौतिक या भावात्मक आकर्षण के केन्द्र हैं। अब तक ऐसे केन्द्रों का अध्ययन, काल, निर्णय इतिहास, धर्म या अर्थशास्त्र जैसे किसी एक विषय तक ही सीमित एकांगी रहा है, सर्वसंपूर्ण नहीं, जिससे सृजनात्मक कलाओं के क्षेत्र में बहुविध कार्यकलाप संचालित होतें है इसलिए क्षेत्र सम्पदा प्रभाग के अंतर्गत किसी स्थान विशेष या मंदिर और उसकी इकाइयों के अध्ययन की ही कल्पना नहीं की गई बल्कि केन्द्र विशेष के भक्ति विषयक, कलात्मक, भौगोलिक या सामाजिक पक्षों को परस्पर जोड़ने की प्रक्रिया को भी कार्यक्रम में शामिल किया गया है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने दो ऐसे केन्द्रों को अध्ययन के लिए चुना है जो इस प्रकार है : उत्तर में व्रज और दक्षिण भारत में बृहदीश्वर मंदिर।

1. ब्रज प्रकल्प

1. भक्तिरसामृतसिन्धु (खण्ड–2) के प्रकाशन का कार्य प्रगति पर है।

2. डेविड हेबरमैन द्वारा अंग्रेजी में अनूदित भक्ति रसामृतसिन्धु की पाण्डुलिपि फ्लापि डिस्कों में (प्रकाशनार्थ) प्राप्त हो चुकी है।

कार्यक्रम घ : यूनेस्को चेयर

सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र में स्थापित यूनेस्को चेयर इस समय "सांस्कृतिक विरासत की पहचान और वृद्धि : विकास के प्रबंध में एक आन्तरिक आवश्यकता" विषय के अध्ययन में संलग्न है।

इस संबंध में परियोजना का कार्य उत्तर भारत के 20 राज्यों में चल रहा है। 48 गांवों

में क्षेत्र–कार्य और रिपोर्ट लिखने का काम प्रगति पर था।

इनमें से, उड़ीसा, सिक्किम, हिमाचल प्रदेश, बिहार, जम्मू और कश्मीर, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और अंडमान तथा नीकोबार द्वीपसमूह से 28 विस्तृत परियोजना रिपोर्टें प्राप्त हो चुकी है।

प्रकाशन

ञ"विलेज इंडिया : आइडेंटिफिकेशन एंड एनहान्समेंट ऑफ कल्चरल हेरिटेज" (एक अंतरिम रिपोर्ट) लेखक : बैद्यनाथ सरस्वती, प्रकाशित हो चुकी हैं।

कलादर्शन

(प्रचार–प्रसार एवं प्रस्तुतिकरण प्रभाग)

कलादर्शन प्रभाग इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का चौथा प्रभाग है। यह विभिन्न संस्कृतियों, विषयों/शास्त्रों समाज के भिन्न–भिन्न स्तरों एवं नानाविध कलाओं के बीच रचनात्मक संवाद को सुकर बनाने के लिए स्थान एवं मंच की सुविधा उपलब्ध कराता है। अपने कार्यक्रमों के माध्यम से इस प्रभाग अभिव्यक्ति तथा प्रस्तुति की एक अद्‌भुत शैली विकसित की है। यह प्रभाग इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के उद्‌देश्यों को बढावा देने के लिए एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर प्रदर्शनियों, अन्तविर्षक संगोष्ठियों और प्रस्तुतियां आयोजित करता है।

कार्यक्रम क : संग्रह

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की ओर से उसकी संकल्पनात्मक परिधि के भीतर रहते हुए प्रदर्शनियां आयोजित करने का दायित्व इस कलादर्शन प्रभाग पर है। इन प्रदर्शिनियों के आयोजन से पहले व्यापक रूप से शैक्षिक/अकादमिक तथा अनुसंधान कार्य किया जाता है। प्रदर्शनी के बाद उससे संबंधित पाठ्‌यसामग्री चित्रफलक तथा उसमें प्रदर्शित वस्तुएँ प्रदर्शनी अभिलेखागार में रखी जाती है जहां से उनका उपयोग इन विद्वानों/अध्येताओं तथा संस्थाओं द्वारा संदर्भ तथा स्रोत सामग्रियों के रूप में किया जाता है जो इन अकादमिक जानकारियों का लाभ उठाना चाहते हैं। प्रदर्शनियां प्रदर्शित वस्तुएं तथा सहायक सामग्रियां प्रदर्शनी अभिलेखागार से समय–समय पर उधार दी जाती हैं।

वर्ष 1999–2000 के दौरान आयोजित प्रदर्शनियों, संगोष्ठियों और व्याख्यानों के माध्यम से संगृहीत नानाविध सामग्रियों को वर्गीकरण करने, उन्हें अवाप्ति रजिस्टर में चढ़ाने और पुनः व्यवस्थित करने प्रयत्न जारी रहे।

कार्यक्रम ख : संगोष्ठियां और प्रदर्शनियां

1. संगोष्ठियां

कलादर्शन प्रभाग ने (1) "असली विरासत" विषय पर 1 फरवरी, 2000 को, (2) "वास्तु–विद्या : शास्त्र और प्रयोग" विषय पर 23 से 26 फरवरी 2000 तक आयोजित संगोष्ठियों के लिए अन्य प्रभागों को संभारतंत्रीय तथा अन्य सहायता प्रदान की।

प्रदर्शनियां

वर्ष 1999–2000 में, कलादर्शन प्रभाग ने ये सात प्रदर्शनियां आयोजित कीं : (1) पंचतंत्र की कहानियों पर आधारित बच्चों की चित्रकारियां, (2) कलेवाला : फिनलैंड का राष्ट्रीय महाकाव्य, (3) स्वप्न के कुछ बच्चे, (4) अनंत क्षितिज, (5) प्रतिमाएं (आइकॉन्स), (6) घटनाएं–ज्योतिर्मय क्षणों की फोटो डायरी और (7) भारत–अमेरिका संबंध।

1. पंचतंत्र की कहानियों पर आधारित बच्चों की चित्रकारियां

संस्कृत के एक प्राचीन ग्रंथ "पंचतंत्र" की कहानियों पर आधारित चित्रकारियों की यह प्रदर्शनी राष्ट्रीय बाल भवन के सहयोग से बाल भवन संग्रहालय में 21 सितंबर से 20 नवंबर, 1999 तक आयोजित की गई।

विभिन्न स्कूलों के बच्चों को पंचतंत्र की कहानियों के विषय में चित्रकारी बनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया और उसके फलस्वरूप लगभग 600 चित्रकारियों तैयार की गई जिनमें पंचतंत्र की कहानियों और उनके पात्रों को बच्चों ने अपनी समझ–बूझ के अनुसार चित्रित किया। बच्चों में प्रदर्शनी के प्रति बहुत रूचि जागृत हुई। प्रत्येक वर्ग के तीन–तीन पुरस्कार निर्णायक मंडल द्वारा चुने गए चित्रों पर हरियाली तीज के शुभ दिन, जो जनपद–संपदा प्रभाग का वार्षिक स्थापना दिवस भी होता है, प्रदान किए गए।

प्रदर्शनी को बहुत सराहा गया। कुछ दर्शकों की टीका–टिप्पणियां नीचे दी जा रही हैं :–

"बच्चों द्वारा बनाई गई चित्रकारियां विलक्षण हैं। रंगयोजना भी शानदार है। बच्चों को ऐसी चित्रकारियां बनाते हुए देखना बहुत अच्छा लगता है। मैं उनमें से एक–एक को बधाई देना चाहूंगा।

——ईशा पन्त
बाल भवन।

"बच्चों ने प्रदर्शित चित्रों का वास्तव में बहुत आनन्द लिया।

——कैंब्रिज स्कूल
नोएडा।

"बढ़िया, कल्पानाप्रसूत कृति।"

इंडियन एक्सप्रेस।

"सृजनकला की शानदार अभिव्यक्ति जो हमारी उदीयमान पीढ़ी द्वारा प्रस्तुत की गई। सरकार तथा जनता द्वारा ऐसी प्रदर्शनियां प्रोत्साहित की जानी चाहिए।"

——तृण एवं पूजा
पायनियर कार्यालय।

"नन्हें–नन्हें हाथों द्वारा चित्रित, उत्कृष्ट कृतियां प्रदर्शित की गई हैं। प्रदर्शनी बहुत रोचक है।

——मीडो
ब्रुक स्कूल।

2. कलेवाला–फिनलैंड का राष्ट्रीय महाकाव्य

दिनांक 11 से 22 अक्टूबर, 1999 तक यह प्रदर्शनी इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में फिनलैंड के राजदूतावास के सहयोग से आयोजित की गई जो अपने राष्ट्रीय महाकाव्य कलेवाला के प्रणयन की 150वीं वर्षगाँठ मना रहा था। प्रदर्शनी में दक्षिण भारत के "सिरी" महाकाव्य का भी एक अनुभाग था जो एक सम्मिलित भारतीय–फिनिश दल द्वारा तैयार किया गया था।

प्रदर्शनी को अच्छा स्वागत हुआ। कुछ दर्शकों की विचार–टिप्पणियां नीचे दी जा रही हैं :

"अद्भुत छायाचित्र जो प्रकृति के प्रति गहरे प्यार के द्योतक हैं। बस करते जाइए। शुभकामनाएं।"

—— अभिप्रा,
नई दिल्ली।

"फिनलैंड के महाकाव्य कलेवाला की शिक्षाप्रद चित्रात्मक प्रदर्शनी, बड़ी सुन्दरता के साथ प्रस्तुत।"

—— बीरबल मलिक
निदेशक, "सेमटास
नई दिल्ली।

"इस महाकाव्य के बारे में जान पाना मेरे लिए वास्तव में एक अद्भुत अनुभव था। मैं उस विधि की भी प्रशंसा करती हूँ। जिसके द्वारा आज तक जीवित रखा गया है।"

—— रतन माला वी.।

"दो परम्पराओं और एक अनुराग की सुन्दर अभिव्यक्ति।"

—— बी.ए. विवेक राय,
मंगलौर।

"हेलसिंकी में हमारे मित्रों को अवश्य ही सुखद आश्चर्य का अनुभव होगा जब वे अपनी डाक पेटी खोलेंगे और दिल्ली से भेजी गई खबरें पढ़ेगे। निस्संदेह, एक अत्यंत रोचक प्रस्तुति।"

—— रविन्द्र चौधरी।

3. स्वप्न के कुछ बच्चे

यह एक अन्य दिलचस्प प्रदर्शनी थी जो आस्ट्रेलियाई कला परिषद के सहयोग से 16 नवंबर से 5 दिसंबर, 1999 तक जनता के लिए प्रस्तुत की गई थी। इसमें विभिन्न प्रकार के छाया चित्र प्रदर्शित किए गए थे जिनमें आस्ट्रलिया की एक वैकल्पिक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रभाव का चित्रण प्रस्तुत किया गया था।

4. अनन्त क्षितिज

दिल्ली निवासी तीन फोटो–पत्रकार अर्थात् गुरिन्दर ओसान, प्रदीप भाटिया और दिनेश कृष्णन द्वारा खीचे गए फोटोग्राफों की यह प्रदर्शनी 4 से 30 जनवरी 2000 तक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परिसर में स्थित माटीघर में लगाई गई।

दर्शकों ने प्रदर्शनी की भूरि–भूरि प्रशंसा की। दर्शकों में अनेक जाने–माने

फोटो–पत्रकार भी थे। कुछ दर्शकों की विचार–टिप्पणियां नीचे दी गई है :–

"हिमालय श्रृंखला की मनोदशाओं को अद्‌भुत छायांकन।

—— एल. नरेन्द्र।

"भूदृश्यों के चित्रों की राजधानी में आज तक हुई सर्वोत्तम प्रदर्शनी। इन सृजनशील एवं साहसी युवाओं को बधाइयां। मेरी सर्वोत्तम शुभ कामनाएं स्वीकार करें।"

—— एस. पॉल।

"बहुत शानदार फोटोग्राफी। एक साथ इतने अधिक सुन्दर फोटोग्राफ बहुत कम देखने को मिलते हैं। बढ़िया रंग। अत्यंत काव्य काव्यात्मक एवं जीवन्त।"

——जी.एस. ग्रेवाल।

"एक सुन्दर सहयोगजन्य सम्मिलित कार्य एवं उत्कृष्ट चित्र। मंगल कामनाओं के साथ।"

—— अरुण जेतली

5. प्रतिमाएं (आइकॉन्स)

शुवप्रसन्न की चित्रकारियों की "आइकॉन्स" शीर्षक प्रदर्शनी इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में 18 फरवरी से 5 मार्च, 2000 तक आर्ट इण्डस के सहयोग से लगाई गई।

प्रदर्शनी का अच्छा स्वागत हुआ और चित्रकारों तथा जनसाधारण ने भी इसे सराहा। दर्शकों की कुछ रोचक टिप्पणियां नीचे दी गई है :

"मुझे मिथक, महाकाव्य, कर्मकाण्ड और वास्तविकता की परस्पर व्याप्ति पसंद है।

—— सुनील चोपड़ा

"महान प्रदर्शन के लिए बधाइयां। "दि बर्ड" बहुत सुन्दर है।"

—— अंजोली इला मेनन,
माधवी मेनन।

"उत्कृष्ट—बधाइयां।"

—— गोपी गजवानी।

"देवी की प्रतिमाएं, विशेष रूप से "सप्तमातृका" हृदयस्पर्शी हैं कलाकार की सूक्ष्मदृष्टि और चित्रण कौशल दोनों एक दूसरे को चार चांद लगा देतो है। सचमुच "प्रतिमाएं"।

—— डॉ॰ अमन कुमार।

"सचमुच आत्मा अमर है। यह कलाकार की कृतियों में जीवन्त हो उठती है।"

——ज्योती मल्होत्रा

6. घटनाएं :— ज्योतिर्मय क्षणों की फोटो डायरी

फोटो—प्रदर्शनी की श्रृंखला में, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 9 से 31 मार्च, 2000 तक एक और प्रदर्शनी का आयोजन किया, जिसका शीर्षक था हैपनिंग्स—ए फोटो—डायरी ऑफ ल्यूमिनस मोमेन्ट्स" (घटनाएं : ज्योतिर्मय क्षणों की एक फोटो—डायरी)। छायाकार थे गुजरात के सुप्रसिद्व फोटोग्राफर श्री अश्विन मेहता।

प्रदर्शनी को बहुत सराहा गया। दर्शकों द्वारा की गई कुछ रोचक टिप्पणियां नीचे दी गई है :—

"ऐसे आकर्षक छायाचित्र सौभाग्य से ही देखने को मिलते है"

—— डॉ॰ आर.वी.वी.अय्यर,
सचिव, भारत सरकार
संस्कृति विभाग

"अत्यंत कल्पनाशील, गंभीर विचार इन प्रदर्शों के पीछे हैं। छायांकन बहुत अच्छा बन पड़ा है। अवलाकनार्थ स्थानों/क्षणों को एक साथ वर्गीकृत किया गया है।"

——फैंक क्रिस्टोफर,
उप निदेशक, लोकसभा सचिवालय,
नई दिल्ली।

"आपने जो कार्य और जीवन–शैली अपनाई है दोनों ही प्रेरणाप्रद हैं– विशेष रूप से आज के सतही, मीडिया–चालित, कृत्रिमतापूर्ण समय में। काश! मैं आप से मिल सकता–शायद मैं आपसे तिथाल में मिलूं। यह मेरे गौरव की बात हागी।
धन्यवाद।"

—— प्रबुद्ध दास गुप्ता।

"फोटोग्राफ तो अत्यंत आकर्षक हैं ही, उनके रंग भी अतियथार्थवादी है। एक मामूली चीज को भी एक नया अर्थ दे दिया गया है। वे सार्थक हैं–सामान्य दुनियादारी से राहत दिलाते हैं।"

—— तरिणी माथुर।

"वाह! चित्रों का कितना सुन्दर सग्रह और शब्दों का सांग्रह तो और भी सुन्दर। शब्द और चित्र दोनों ही एक साथ प्रभावित करते हैं और मैं तो चूक ही जाता ..... अश्विन, अपने उद्देश्य में लगे रहो, प्रदर्शन के लिए धन्यवाद।

—— अविनाश पसरीचा।

"आपकी प्रदर्शित वस्तुओं के अवलोकन से और कुछ बस आनन्द ही आनंद प्राप्त होता है। आपका कार्य सदा प्रेरणाप्रद रहा है। आपसे मिलना मेरे लिए गौरव की बात होती ..... लेकिन मुझे पक्का विश्वास है कि मैं एक–न–एक दिन यह गौरव अवश्य प्राप्त करुँगी।

—— अनिता खेमका।

7. भारत–अमेरिका संबंध

संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति श्री बिल क्लिंटन की भारत यात्रा के अवसर पर, विदेश मंत्रालय, दृश्य–श्रव्य प्रचार निदेशालय (डी.एव.वी.पी.) और सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय द्वारा 15 से 25 मार्च, 2000 तक माटीघर (इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र) में एक अनुपम प्रदर्शनी आयोजित की गई जिसका शीर्षक था : "भारत–अमेरिका संबंध। प्रदर्शनी का उद्घाटन माननीय विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह और भारत में अमेरिका के राजदूत महामहिम श्री रिचर्ड कैलेस्टे और माननीय सूचना तथा मंत्री अरुण जेतली द्वारा किया गया। अनेक राजनयिक तथा अन्य विशिष्ट महानुभाव इस अवसर पर उपस्थित थे।

कार्यक्रम ग : स्मारकीय व्याख्यान

(1) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारकीय व्याख्यान :

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 16वां आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारकीय व्याख्यान आचार्य हजारी द्विवेदी स्मृति न्यास के सहयोग से 19 अगस्त, 1999 को नई दिल्ली में आयोजित किया। इस वर्ष का व्याख्यान लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के उप–कुलपति एवं संस्कृत के सुविख्यात विद्वान प्रो॰ वाचस्पति उपाध्याय द्वारा "कालिदास की लालित्य–योजना विषय पर दिया गया। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की उप–कुलपति डॉ॰ सरोजिनी महिषी ने आयोजन की अध्यक्षता की और बड़ी संख्या में विद्वान, लेखक एवं अन्य बुद्धिजीवी इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए।

कार्यक्रम घ : अन्य कार्यक्रम

(फिल्म प्रदर्शन/वार्त्ताएं और व्याख्यान)

फिल्मी प्रदर्शन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने भिन्न–भिन्न अवसरों पर अपने सांस्कृतिक अभिलेखागार में से अनेक फिल्में प्रदर्शित की। ब्यौरा नीचे दिया गया है :

कानपुर की सुप्रसिद्व नौटंकी कलाकार गुलाब बाई के जीवन और उपब्लिधयों पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा निर्मित फिल्म "एक थी गुलाब" प्रदर्शित की गई। पृथ्वीराज मिश्र द्वारा निर्मित एक अन्य फिल्म "नवकलेवर" जिसमें हर 12 से 17 वर्षों में एकबार आने वाला नवकलेवर महोत्सव चित्रित है, आम जनता का दिखाई गई। इसके अतिरिक्त, केन्द्र द्वारा निर्मित एक अन्य फिल्म "नाद नगर ना उजारो" जो सुप्रसिद्ध ध्रुपद फिल्म गायिका असगरी बाई पर आधारित है, जनता को दिखाई गई।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा सात भागों में निर्मित फिल्म "कथाकलि" भी भिन्न–भिन्न तारीखों को जनता के समक्ष प्रदर्शित की गई। इसके अलावा, पंचतंत्र की एक कहानी "मित्रलाभ" पर भोपाल के रंगश्री थियेटर द्वारा प्रस्तुत नृत्याटिका की फिल्म राष्ट्रीय बाल भवन के लगभग 3000 बच्चों को ग्रीष्मकालीन शिविर के दौरान दिखाई गई। एरिक डी मक्कर द्वारा निर्मित फिल्म "तेय्यम : भगवान विष्णु मूर्ति का वार्षिक आगमन" अक्टूबर 1999 में प्रदिर्शत की गई और केन्द्र के विद्वान अध्येताओं द्वारा उस कर्मकाण्ड पर चर्चा की गई।

सार्वजनिक व्याख्यान

वर्ष 1999–2000 के दौरान, नानाविध विषयों पर विशेषज्ञों/विद्वानों ने बत्तीस (32) सार्वजनिक व्याख्यान दिए। उनमें से विशेष रूप से उल्लेखनीय है :

(1) "भारतीय अध्यात्म विद्या में पात्रता व अपात्रता" विषय पर आचार्य पं॰ अशोक द्विवेदी की वार्ता,

(2) "4–आयामी डिजाइन, मौखिक परंपराएं–परस्पर सक्रिय मल्टीमीडिया डिजाइन के लिए मॉडल" विषय पर डॉ0 ससकिया करसेन बूम का व्याख्यान, (3) प्रा॰ वोंग सिउ लुन का व्याख्यान "चीन तथा भारत में राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों की समस्याएं एवं नीतियां" विषय पर था।

इसके अतिरिक्त, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और विकास अध्ययन के राष्ट्रीय संस्थान के भूतपूर्व संस्थापक निदेशक डॉ॰ ए. रहमान ने "10वीं से 18वीं शताब्दी तक विज्ञान, प्रौद्योगिकी और संस्कृति" विषय पर व्याख्यान दिया। गांध ी पीस फाउंडेशन के श्री अनुपम मिश्र ने "राजस्थान में संग्रह की परंपरा" विषय पर अपनी वार्ता प्रस्तुत की।

डा॰ श्रीमती सरोजिनी महिषी ने "परंपरागत समाज में स्त्रियों की स्थिति" विषय पर अपना रोचक व्याख्यान दिया। श्रोताओं ने व्याख्यान को बहुत सराहा।

वर्ष 1999–2000 के दौरान आयोजित व्याख्यानों की तालिका अनुबन्ध–8 पर दी गई है।

अंतर्राष्ट्रीय संवाद

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, अधिवेशनों, संगोष्ठियों आदि के माध्यम से, अपने सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रमों समेत भारत सरकार द्वारा अनुमोदित अनेक अंतरसांस्कृतिक कार्यक्रमों के बीच सक्रिय संवाद को पोषण एवं प्रोत्साहन देता है। सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम ऐसा साधन है जिसके द्वारा केन्द्र स्लाइडें प्राप्त करने के उद्देश्य को प्राप्त करने और विद्वानों के आदान–प्रदान जैसे समानहित के कार्यक्रम बनने का प्रयास करता है।

1. सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम

1. आलोच्य वर्ष में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा निम्नलिखित देशों के साथ विभिन्न विषयों से संबंधित सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम को अंतिम रूप से दिया गया :–

क्र॰ सं॰	देश	अवधि
1.	भारत–ट्यूनीसिया	2000–2002
2.	भारत–चीन	2000–2002
3.	भारत–कंबोडिया	2000–2002
4.	भारत–रूस	2000–2002
5.	भारत–कुवैत	2000–2001
6.	भारत–कोरिया (गणराज्य)	1999–2001
7.	भारत–(दक्षिण कोरिया) इरान	1999–2001
8.	भारत–मिस्र	1999–2001
9.	भारत–उजबेकिस्तान	1999–2001
10.	भारत–ईरान	1998–2001

1.2. समीक्षाधीन अवधि में, निम्नलिखित देशों के साथ सांस्कृतिक आदान–

प्रदान कार्यक्रम में शामिल करने लिए प्रस्ताव संस्कृति विभाग के पास भेजे गए है :–

क्रम संख्या	देश	अवधि
1.	भारत–जर्मनी	2001–2003
2.	भारत–बंगला देश	2000–2002
3.	भारत–पुर्तगाल	2001–2002
4.	भारत–इंडोनेशिया	2000–2001
5.	भारत–इटली	2001–2003
6.	भारत–लक्समबर्ग	2000–2002

2. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के साथ संबंद्ध किए गए अध्येता/विद्वान

विदेश मंत्रालय ने आलोच्य अवधि के अपने "आइटेक" कार्यक्रम के अंतर्गत, चेकोस्लोवाकिया के निम्नलिखित चार भारत–विदों को 16.01.2000 से दो महीने की अवधि के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के साथ संबंद्ध किया। इन अध्येताओं के आवास और अध्ययन यात्रा का खर्च विदेश मंत्रालय द्वारा आयोजित किया गया। इन भारत भारतविदों के नाम और अध्ययन विषय नीचे दिए जा रहे है :–

1.	डॉ॰ जैन फिलिपस्की	:	"युग–युग से भारत
2.	डा॰ डैगमार मार्कोवा	:	"चैक–हिन्दी कोश और आधुनिक हिन्दी साहित्य"
3.	डॉ॰ स्वेतिस्लाव कॉस्टिक	:	"हिन्दी और उसकी क्रिया संबंधी व्याकरणिक श्रेणी"

4. डॉ॰ ब्लैंका नोट कोवा : "भारतीय साहित्य अर्थात् काव्य में आधुनिकता"

प्रो॰ एस. आर. शर्मा जो कि अपनी अनुसंधान परियोजना "भारतीय खगोलीय और कालमापी यंत्रों की वर्णनात्मक सूची" के संबंध में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के साथ जुड़े हैं, उन्हें अपनी परियोजना के लिए अक्टूबर 1999 से मार्च 2001 तक का दो वर्ष का समय और मिल गया है।

4. विदेशों से अनुदान

(1) यूनेस्को अनुदानः

"मध्य एशियाई पुरावशेषों का प्रलेखन" विषयक परियोजना के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को 5000 अमेरिकी डॉलर का यूनेस्को अनुदान दिया गया। तदनुसार केन्द्र ने मध्य एशियाई पुरावशेषों पर एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्टी 27–28 अप्रैल 2000 को आयोजित की। "संगोष्ठी में भाग लेने वालों में भारत के प्रतिनिधियों के अलावा, यूनाइटिक जर्मनी, और रूस के प्रतिनिधि भी शामिल थे।

(2) संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी.)

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के तत्वावधान में यू.एन.डी.पी. की सहायता से निम्नलिखित योजनाएं हाथ में ली गई :–

1. परियोजनाएं :

(1) विभिन्न मल्टीमीडिया परियोजनएं सही दिशा में आगे बढ़ रही हैं और शीघ्र ही संपन्न होने वाली है।

(2) "मुक्तेश्वर मंदिर" की परियोजनाएं संपन्न हो चुकी हैं और दिसंबर 1999 तक वह परीक्षणाधीन रही। उसका सीडी–रोम प्रकाशित किया जा चुका है उसका विमोचन अतिशीघ्र कर दिया जाएगा।

(3) "शैल कला" विषयक परियोजना और भी समाप्त हो चुकी है और उसे उसे दूसरी प्रति तैयार करने के लिए भेजा गया है।

(4) "ब्रूनर की चित्रकारियां" और "मुखौटा" (मास्क) विषय वाली मल्टीमीडिया परियोजनाओं में संशोधन–परिवर्तन किया जा रहा है और सीडी–रोम का कार्य प्रगति पर है।

(5) अन्य परियोजनाओं को उस अंतिम रूप से दिया जा सकेगा जब नियुक्त परामर्शदातों से पर्याप्त इनपुट प्राप्त हो जाएगी।

वर्ष 1999–2000 के दौरान परामर्शदाताओं को आगमनः

1. डा॰ आदित्य मलिक, भारत विद्या विभाग, जर्मनी "परियोजना : देवनारायण"
2. डॉ॰ आर. नागस्वामी–परियोजना : बृहदीश्वर मंदिर।"
3. प्रो॰ टी.एस. मैक्सवेल, जर्मनी से–परियोजना : विश्वरूप"।
4. डॉ॰ एच.जी. रानाडे, पुणे से–परियोजना : अग्निचयन"।
5. श्रीमती एवं श्री फिलियोजा–दिसंबर 1999 में केन्द्र में आए, परियोजना, "मुक्तेश्वर।"

3. अध्येतावृत्ति प्रशिक्षण

श्री उमेश कुमार बत्रा और श्री जी. चामुण्डीश्वर टी.ए को वर्ष 1999 के दौरान यू. एस.ए. के उत्तर कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में अध्येतावृत्ति पर प्रशिक्षण के लिए भेजा गया।

4. संगोष्ठियों में उपस्थिति/आन्तरिक प्रस्तुति

1. "प्रतीयमान वास्तविकता" विषय पर एक संगोष्ठी ब्रिटिश काउन्सिल के सहयोग से जनवरी 2000 में आयोजित की गई।

2. "अग्निचयन", "मुक्तेश्वर" और "विश्वरूप" नामक मल्टीमीडिया परियोजनाओं पर एक प्रस्तुति दिनांक 13.05.1999 को आन्तरिक अध येताओं की दिखाई गई।

3. जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के संकाय सदस्य और डी.आर.डी.ओ. (रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन) के वैज्ञानिक वर्ष 1999–2000 के दौरान सी.आई.एल. में आए और उन्हें वहां चल रही परियोजनाओं के संबंध में प्रस्तुतियां दिखाई गई।

5. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के वेबसाइट को डेटा भर कर समृद्ध बनाया गया है और इस समय इसका वेबस्पेस लगभग 40 एम.बी. है।

6. इनके अतिरिक्त, मल्टीमीडिया प्रलेखन की सुविधा के विकास के संबंध में, नियमित रूप से प्रस्तुतियां/प्रसार संबंधी गतिविधियां संपन्न की जाती रहीं।

7. वर्ष 1999 के दौरान यू.एन.डी.पी. अनुदान में से 5.40 लाख रुपए के मूल्य परिसंपत्तियां खरीदी गई।

फोर्ड फाउण्डेशन अनुदान

आलोच्य अवधि में, डा॰ एच.सी. रानाडे को 30 अक्टूबर से 2 नवंबर तक कियोतो, जापान में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय वैदिक कार्यशाला में भाग लेने के लिए फोर्ड फाउण्डेशन अनुदान में से आंशिक रूप से वित्त–पोषित किया गया। इस अनुदान का अब उपयोग किया जा चुका है और फोर्ड फाउण्डेशन को इसकी अंतिम रिपोर्ट भेज दी गई है।

सूत्रधार

(प्रशासन एवं वित्त प्रभाग)

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का सूत्रधार प्रभाग जो इसका प्रशासनिक संबंद्ध है, केन्द्र के अन्य सभी प्रभागों तथा एककों को प्रशासनिक, प्रबंधकीय तथा संगठनात्मक सहायता एवं सेवाएं प्रदान करता रहा और संस्था के लेखों के अनुरक्षण तथा प्रबन्ध के साथ–साथ केन्द्र की समस्त गतिविधियों के समन्वय, प्रशासन तथा नीति–निर्धारण के लिए भी एक प्रमुख एजेंसी के रूप में कार्य करता रहा।

क. कार्मिक

वर्ष 1999–2000 के दौरान, केन्द्र में विभिन्न महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य करने लिए कुछ नए अधिकारी नियुक्त किए गए। 31 मार्च, 2000 की स्थिति मे अनुसार केन्द्र के महत्वपूर्ण अधिकारियों, शोध अध्येताओं की सूची अनुबंध 3 और 4 पर दी गई है।

ख. आपूर्ति एवं सेवाएं

आपूर्ति एवं सेवाएं एकक केन्द्र के सभी अकादमिक प्रभागों को सम्भारतंत्रीय तथा संबंधित सहायता प्रदान करता रहा। इस एकक ने वर्ष के दौरान अनेक राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संगाष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं और प्रदर्शतियों की व्यवस्था में भी सहायता दी। इसने सभी संबद्ध मंत्रालयों/विभागों और अन्य संगठनों के साथ समन्वय बनाए रखा ताकि केन्द्र का कार्य सुचारु रूप से कुशलतापुर्वक चलता रहें।

ग. शाखा कार्यालय

वाराणसी

वाराणसी का शाखा कार्यालय, जो 1988 में स्थापित किया गया था, कलाकोश प्रभाग के एकक के रूप में, एक अवैतनिक समन्वायक की देखरेख में

अपने नियमित कर्मचारियों और अनुसंधानकर्ताओं के माध्यम से काम करता रहा। और उसने विशेषज्ञों की सहायता से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की परियोजनाओं के लिए व्याख्यान तथा परिचर्चाएं आयोजित करने के साथ–साथ शोध संबंधी गतिविधियों तथा डेटा संग्रह का काम किया।

इम्फाल

इम्फाल कार्यालय 1991 में स्थापित किया गया था और यह जनपद–सम्पदा विभाग के अंतर्गत एक अवैतनिक समन्वायक देख–रेख में कार्य कर रहा है। इस कार्यालय के कर्मचारी मुख्यतः मणिपुर क्षेत्र में डेटासंग्रह के काम के लिए लगाए गए है।

घ. वित्त एवं लेखे

31 मार्च, 1999 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष के लेखों को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के न्यास द्वारा अपने घोषणा विलेख के अनुच्छेद 19.1 के अनुसार अनुमोदित और स्वीकृत किया जा चुका है।

भारत सरकार ने केन्द्र को निम्नलिखित लाभ/रियायतें प्रदान हुए अधिसूचनाएं जारी की है :–

(1) राष्ट्रीय गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की आय को कर–निर्धारण वर्ष 1989–99 से 2000–2001 तक आयकर से मुक्त कर दिया है। आयकर अधिनियम की धारा 10 (23–ग) (वी) के अंतर्गत आवश्यक कर मुक्ति दे दी गई है। देखिएः 9 अप्रैल,1997 की अधिसूचना संख्या 10337 (एफ.सं. 197/39/97/आई.टी.ए. –1)

(2) न्यास को धारा–35 (I) (III) के अंतर्गत, अधिसूचना संख्या 1884 के द्वारा एक संस्था घोषित कर दिया गया है, जिससे सामाजिक विज्ञान आदि में अनुसंधान के लिए केन्द्र को दी गई कोई भी राशि आयकर अधिनियम की धारा 35 (1) (3) के अंतर्गत दाता की आय में से कटौती की पात्र होगी। आयकर अधिनियम के अंतर्गत इस छूट की पूर्वपीठिका के रूप में, विज्ञान तथा प्रौधोगिकी मंत्रालय ने इस संगठन केन्द्र को आयकर नियम, 1962 के नियम 6 के अंतर्गत एक वैज्ञानिक तथा

अनुसंधान संस्थान के रूप में अपनी मान्यता प्रदान कर दी है। इस मान्यता के आधार पर केन्द्र को आयात पर सीमा शुल्क से भी छूट मिल सकती है और आयात प्रक्रियामें भी सुविधा प्राप्त हो सकती है।

(3) केन्द्र को किसी कलाकृति, पाण्डुलिपि, रेखाचित्र, छायाचित्र, मुद्रण आदि की बिक्री से किसी व्यक्ति का होने पूंजीगत लाभ आयकर अधिनियम की धारा 47 के अंतर्गत निर्धारण वर्ष 1999–2000 से 2000–2001 तक के लिए आयकर से मुक्त कर दिए गए है : देखिए भारत सरकार, वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) की दिनांक 28.10.1997 की अधिसूचना संख्या 10447 फा. सं. 207/5/93 आई. टी.ए–।

(4) व्यक्तियों द्वारा केन्द्र को किया गया कोई भी दान आयकर अधिनियम की धारा 80 (छ) के अंतर्गत 50 प्रतिशत तक छूट का पात्र होगा। केन्द्र को यह छूट 31.03. 2002 तक दी गई है : देखिए : आयकर निदेशक (छूट) का दिनांक 10 मई, 1999 का पत्र संख्या डी.आई.टी. (छूट)/98–99/379/87/154

ङ. आवास

केन्द्र का प्रधान कार्यालय जनपद स्थित सेंट्रल विस्टा मेस के भवनों और डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद मार्ग स्थित बंगला संख्या 3 में स्थापित रहा। आशा की जाती है कि सेंट्रल विस्टा मेस भवन केन्द्र के विभिन्न प्रभागों तथा एककों के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध करा सकेगा। डा॰ राजेन्द्र प्रसाद मार्ग के बंगलों संख्या 5 नई इमारत अब बन कर तैयार होने वाली है। इस कार्य में वर्ष 1999–2000 के दौरान अच्छी प्रगति हुई।

च. अध्येतावृत्ति योजाएं

1. शोध अध्येतावृत्तियां

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की शोधवृत्ति योजना वर्ष भी चलती रही और वर्ष 1999–2000 के दौरान शोध अध्येताओं की संख्या इस प्रकार रही :–

मुख्यालय : 6

चेन्नई माइक्रोफिल्म एकक : 3 (ब्योरे के लिए अनुबन्ध–4 देखें)

(2) इन्दिरा गांधी स्मारकीय अध्येतावृत्तियां

कलाओं, मानविकी विषयों तथा संस्कृति के क्षेत्र में सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक कार्य में अपने आप को स्वतंत्रतापूर्वक संलग्न रखने के लिए विख्यात एवं अत्यंत प्रतिभाशाली व्यक्तियों को उपयुक्त अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के नाम से स्मारकीय अध्येतावृत्तियों की एक योजना प्रारंभ की है। ये अध्येतावृत्तियां किसी भी विषय के ऐसे–विद्वानों/सृजनधर्मी कलाकारों के लिए उपलब्ध हैं जिनके पास सृजनात्मक परियोजनाएं हैं और जो बहु–विषयक, अंतर्विषयक अथवा संकुल सांस्कृतिक स्वरूप पर शोध कार्य करने का तत्पर है। आवेदकों को ऐसे सर्जनात्मक या समालोचनात्मक कार्य का प्रामाणिक अनुभव होना चाहिए जो विशुद्ध अकादमिक स्वरूप के संकीर्ण क्षेत्र तक ही सीमित न हो। अध्येताओं को भारत के भीतर अपनी पसंद के किसी भी स्थान में रह कर कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता होगी। वृत्तिका प्राप्त कर रहें अध्येताओं की संख्या किसी भी समय छह से अधिक नहीं होगी। प्रत्येक अध्येता को मासिक रूप से 10,000 रुपए वृत्तिका के रूप में प्रतिमाह दिए जाएंगे। इसके अलावा उसे दो वर्ष की अवधि के लिए तथा यात्रा व्यय दिया जाएगें। इसके अलावा उसे दो वर्ष की अवधि के लिए आकस्मिक तथा यात्रा व्यय दिया जाएगा।

वर्ष 1996 की अध्येतावृत्ति पुणे के विख्यात मराठी तथा अंग्रेजी लेखक श्री दिलीप चित्रे को दी गई थी। वर्ष 1997 में, दो सुप्रसिद्ध महानुभावों अर्थात् मशहूर परंपरागत संगीतज्ञ उस्ताद आर.फहीमुद्दीन डागर और अंग्रेजी तथा मलयालम के विख्यात लेखक प्रो. के. अय्यप पणिक्कर को ये अध्येतावृत्तियों का प्रदान की गई थीं। वर्ष 1998 में, दो सुपात्र अध्येताओं, अर्थात् बंगलौर की मानवविज्ञानी (सुश्री) डॉ॰ पद्मा एम. सारंगपणि को और इंडोनेशिया के संगीतज्ञ प्रो. बामबंग सुनार्तो को ये अध्येतावृत्तियां दी गई।

वर्ष 1999 में, दो लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में, इतिहास

के आचार्य प्रो. के.एस.बहेरा और नियोजन एवं स्थापत्य विद्यालय की प्रो॰ नलिनी माधव ठाकुर को इन अध्येतावृत्तियों के लिए चुना गया है। योजना के अंतर्गत् प्रो॰ के.एस. बहेरा ने "भुवनेश्वर लिंगराज : एक बहु–आयामी अध्ययन" नामक परियोजना पर कार्य करने को प्रस्ताव किया है, जबकि प्रो॰ नलिनी एम.ठाकुर द्वारा प्रस्तावित परियोजना का नाम है : भारत में ऐतिहासिक नगरों के पुनरुद्धार के लिए सामान्य ज्ञान की प्रणालियां।

छ. राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ संबंध स्थापना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने अपने विभिन्न प्रभागों के माध्यम से अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं जैसे विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संगठनों तथा सांस्कृतिक संस्थाओं के साथ काफी व्यापक रूप से संबंध स्थापित किए है।

कलानिधि

केन्द्र का कलानिधि पुस्तकालय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर "इफ्ला" अर्थात् पुस्तकालय संघों एवं संस्थाओं के अंतर्राष्ट्रीय संघ के सदस्य के रूप में और राष्ट्रीय स्तर पर "इला" अर्थात् भारतीय पुस्तकालय संघ, विशिष्ट पुस्तकालयों तथा सूचना केन्द्रों (आधार) ऋण और कंप्यूटरबद्ध आदान–प्रदान की अनेक प्रणालियों में भाग लेता रहा। केन्द्र ने अपनी माइक्रोफिल्म बनने की योजना के कार्यान्वयन के लिए अनेक संस्थाओं के साथ सूचनाओं का आदान–प्रदान करने, अध्येताओं/विद्वानों को सहायता देने और परस्पर शोध कार्य के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए सुव्यवस्थित एवं नियमित कार्यक्रम स्थापित किए है। वर्ष 1999–2000 में केन्द्र ने विभिन्न अकादमिक क्षेत्रों जिन संस्थाओं से आदान–प्रदान किया है उनमें प्रमुख है :

कामरूप अनुसंधान समिति, गुवाहाटी,
ओरियंटल रिसर्च इन्स्टिट्यूट एंड मैन्युस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, तिरुवनन्तपुरम्,
गवर्नमेंट ओरियंटल मैन्युस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, चेन्नई
सरस्वती भवन लाइब्रेरी, वाराणसी,
शंकर मठ, कांचीपुरम्

सिंधिया ओरियंटल रिसर्च इन्स्टिट्यूट्, उज्जैन,
राजस्थान प्राच्यशोध संस्थान, जोधपुर,
तंजावुर महाराज सरफोजी की सरस्वती महल लाइब्रेरी, तंजावुर,
भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे,
रामकृष्ण मठ, चेन्नई
गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी,
इस्टिट्यूट ऑफ ऐंटीक्वैरियन एंड हिस्टोरिकल स्टडीज, गुवाहाटी,
डॉ॰ यू.वी.एस. अय्यर लाइब्रेरी (द्वितीय चरण), चेन्नई,
सौराष्ट्र सभा, मदुरै,
जैन बासादि मूडाबिदरी, धर्म स्थल, कर्नाटक।

कलाकोश

समीक्षाधीन वर्ष में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का कलाकोश प्रभाग अपने शोध कार्यक्रमों, संगोष्टियों तथा कार्यशालाओं और प्रकाशन की योजनाओं के माध्यम से अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं से जुड़ा रहा और उसने देश के विभिन्न भागों तथा विदेशों में स्थित कई शोधकर्ताओं तथा विशेषज्ञों सहित अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं तथा विद्वन्निकायों के साथ बराबर संबंध एवं संपर्क बनाए रखा।

इस संदर्भ में निम्नलिखित अकादमिक निकाय उल्लेखनीय है :

अमेरिकन इस्टिट्यूट ऑफ स्टडीज, नई दिल्ली,
आनंद आश्रम संस्थान, पुणे,
भारत का मानव वैज्ञानिक सर्वेक्षण, नई दिल्ली,
भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे,
भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी,
केंद्रीय उच्चतर तिब्बती अध्ययन संस्थान, सारनाथ, वाराणसी,
केंद्रीय पुरातत्व वैज्ञानिक पुस्तकालय, भारत का पुरातत्व वैज्ञानिक सर्वेक्षण, नई दिल्ली

दकन कॉलेज, पुणे,
गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद,
पांडिचेरी फ्रेंच संस्थान, पांडिचेरी,
प्राज्ञ पाठशाला, वाई, महाराष्ट्र,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,
ओरियंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट एंड मैनस्क्रिप्ट्स लाईब्रेरी, केरल विश्वविद्यालय, करिवत्तन, तिरुवनन्तपुरम्,
रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कलकत्ता,
राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली,
महर्षि संदीपनि राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली,
यू.वी. स्वामिनाथ अय्यर लाइब्रेरी, चेन्नई।

जनपद–सम्पदा

अपने परियोजना निदेशकों तथा अनुसंधान कर्ताओं के माध्यम से भारत के भिन्न–भिन्न भागों में अपने कार्यक्रमों के अकादमिक कार्यान्वयन के संदर्भ में, जनपद सम्पदा प्रभाग ने विश्वविद्यालय तंत्र तथा उसके बाहर के विभिन्न शोध संगठनों के साथ अपने संबंध बनाए रखे। प्रभाग मूलभूत विज्ञानों तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों की अग्रणी संस्थओं के साथ बराबर संपर्क तथा संवाद बनाए रखने में सफल रहा है। इन संस्थाओं में शामिल है : खगोल–भौतिकी केंद्र, पुणे, विज्ञान संस्थान, बंगलौर, और भारतीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली। इसके अतिरिक्त, केन्द्र के अनुसंधान कार्यक्रमों अनेक विश्वविद्यालयों के मानव–विज्ञान विभाग भीभाग ले रहे है। इनमें से कुछ विभाग जो इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं वे हैं : मानव विज्ञान विभाग, एच.एन. बहुगणा विश्वविद्यालय, बिहार, मानव विज्ञान संस्थान, मानव–विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली जनजातीय अध्ययन विभाग, अरूणाचल विश्वविद्यालय, आइटानगर, एन.के. बोस स्मारक प्रतिष्ठान, वाराणसी, संग्रहालय, गुवाहटी, इन सब के साथ भी परस्पर आदान–प्रदान तथा संपर्क–संबंध चल रहे हैं।

अपने क्षेत्र सम्पदा प्रभाग ने केन्द्रीय तथा राज्यों के पुरातत्व विभागों के साथ, और

श्री चैतन्य प्रेम संस्थान, वृंदावन, गुवाहटी विश्वद्यिालय, विश्व भारती, पश्चिम बंगाल जैसी राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ भी नियमित रूप से संपर्क–संबंध बनाए रखा है। कलाओं के क्षेत्र में अपने बालजगत के कार्यक्रमों, विशेष रूप से पुत्तलिका कला तथा संगीत में जनपद सम्पदा प्रभाग राष्ट्रीय स्तर की अनेक संस्थाओं के साथ सम्पर्क एवं सहयोग बनाए रखता है, इनमें से कुछ है : संगीत नई दिल्ली, और बाल लेखक तथा चित्रकार संघ।

कलादर्शन

इसी प्रकार कलादर्शन प्रभाग ने अपनी प्रदर्शनियां तथा अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए राष्ट्रीय कला केन्द्र, मुंबई, चिल्ड्रंस बुक ट्रस्ट, बाल भवन सोसायटी, नई दिल्ली, नगर निगम तथा नई दिल्ली के पब्लिक स्कूलों के साथ परस्पर संपर्क की व्यवस्था बना रखी है। इसके अलावा, राष्ट्रीय प्रदर्शनी कला केंद्र, मुंबई, गैलरी आर्ट ट्रस्ट, चेन्नई, राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान, अहमदाबाद, और संस्कृति प्रतिष्ठान, राष्ट्रीय नवकला वीधि, राष्ट्रीय संग्रहालय तथा भारतीय पुरातत्व सोसायटी, नई दिल्ली के साथ–साथ कुछ राजनयिक मिशनों के सांस्कृतिक केन्द्र जापान फाउंडेशन, चीनी सांस्कृतिक एकक और मैक्समुलर भवन, नई दिल्ली के साथ भी नियमित आदान–प्रदान कार्यक्रम बना हुआ है।

भवन परियोजना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की भवन परियोजना का पहला भवन प्रयोग में लाने के लिए शीघ्र ही तैयार हो जाएगा (लगभग सभी सहायक सेवाएं, जैसे वातानुकूलन, विद्युत व्यवस्था, जलापूर्ति, जल–मल निकासी कार्य, अग्नि शमन आदि की व्यवस्था, विद्युत उपकेन्द्र, अतिरिक्त डी.जी. जेनेटर, और लिफ्ट आदि की व्यवस्थाएं लगाई जा चुकी हैं। कम क्षमता वाले भाड़े पर लिए गए डी.जी. सेटों से उप संघटकों की जांच की जा चुकी है, किन्तु नई दिल्ली नगर परिषद् द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली बिजली की आपूर्ति के अभाव में संपूर्ण प्रणालियों की जांच नहीं की जा सकी है। अब चूंकि नई दिल्ली नगर परिषद् के अध्यक्ष ने अतिरिक्त डी.जी. सेट चलाने की अनुमति दे दी है, इसलिए इन प्रणालियों की जांच शुरु की जा सकेगी। और फिर विभिन्न सुविधाएं चालू कर दी जाएंगी। अगले भवन समूह अर्थात्

सूत्रधार, भूमिगत पार्किंग स्थल "ख" जनपद–सम्पदा, प्रदर्शनी दीर्घाएं, संग्रहालय तथा आवासीय खंड के नक्शे जो लगभग 4 वर्ष पहले अनुमोदन के लिए स्थानीय प्राधिकारियों के पास भेजे गए थे, अब उनका अनुमोदन प्राप्त हो चुका है और भवनों के इस समूह में से एक भवन यानी सूत्रधार भवन का कार्य जिसमें दोतल्ला तहखाना शामिल है, आधारिक स्तर पर चल रहा है।

अनुबन्ध

अनुबन्ध –1 पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्यों की सूची (पहले 31.03.2000 की स्थिति के अनुसार और 06.01.2000 तक की स्थिति केअनुसार), अनुबन्ध–2 पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की सूची (पहले 31.03.2000 की स्थिति के अनुसार और फिर 06.01.2000 तक की स्थिति के अनुसार), अनुबंध–3 पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची (31.03.2000 को), अनुबन्ध–4 पर केन्द्र के वरिष्ठ तथा कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं की सूची, अनुबन्ध 5 पर अप्रैल, 1999 से मार्च, 2000 के दौरान हुई प्रदर्शनियों की सूची, अनुबन्ध–6 पर अप्रैल, 1999 से मार्च 2000 के दौरान हुई संगोष्ठियों/सम्मेलनों/कार्यशालाओं की सूची, अनुबन्ध–7 पर केन्द्र में हुए फिल्म तथा वीडियो प्रलेखनों की सूची, अनुबन्ध–8 अप्रैल 1999 से मार्च 2000 के दौरान हुए व्याख्यानों की तालिका, और अनुबन्ध–9 पर मार्च, 1999 से अप्रैल, 2000 के दौरान निकाले गए प्रकाशनों की सूची संलग्न है।

अनुबन्ध–1

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
न्यासी मंडल/बोर्ड
(13. 3. 2000)

1. डॉ॰ लक्ष्मीमल्ल सिंघवी — न्यास अध्यक्ष
   18, विलिंग्डन क्रिसेंट,
   नई दिल्ली–110001

2. श्री आर. वेंकटरामन
   5, सफदरजंग रोड,
   नई दिल्ली –110011

3. श्री पी.वी. नरसिम्हाराव
   9, मोती लाल नेहरु मार्ग,
   नई दिल्ली–110011

4. श्री अनन्त कुमार
   माननीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री,
   भारत सरकार,
   शास्त्री भवन,
   नई दिल्ली–110001
   (पदेन)

5. श्री जगमोहन,
   माननीय शहरी विकास एवं गरीबी उन्मूलन मंत्री,
   भारत सरकार,
   निर्माण भवन,
   नई दिल्ली–110001
   (पदेन)

6. श्रीमती सोनिया गांधी,
10, जनपथ
नई दिल्ली–110011

7. प्रो॰ यशपाल
11–बी, सुपर डीलक्स फ्लैट्स,
सेक्टर 15–ए,
नोएडा, उत्तर प्रदेश

8. श्री आबिद हुसैन,
मकान नं॰ 237,
सेक्टर – 15–ए,
नोएडा, उत्तर प्रदेश

9. पं॰ भीमसेन जोशी,
कलाश्री 36,
लक्ष्मी पार्क कालोनी,
पुणे, महाराष्ट्र

10. प्रो॰ विद्यानिवास मिश्र,
एम–3,बादशाह बाग,
निकट सिगरा, वाराणसी,
उत्तर प्रदेश–221002

11. डॉ॰ एच. नरसिम्हैया,
प्रधान,
नेशनल एजूकेशन सोयाइटी, कर्नाटक,
नेशनल कॉलेज, बसवनगुडी,
बंगलौर–560004 (कर्नाटक)

12. श्री एम.वी. कामत
कल्याणपुर हाउस,
तीसरी सड़क, खार,
मुम्बई–4000052 (महाराष्ट्र)

13. डॉ॰ भूपेन हजारिका
हृषीकेश अपार्टमेंट्स,
फ्लैट नं॰ 205, एफ बिल्डिंग, ए विंग,
पहला छोटा चौराहा, लोखण्डवाला कांप्लेक्स
स्वामी समर्थ नगर, अंधेरी वेस्ट,
मुंबई–4000053 (महाराष्ट्र)

14. कु॰ ऐन्जोली इला मेनन
8, शरीफ अपार्टमेंटस,
2, निजामुद्दीन पूर्व,
नई दिल्ली–110003

15. श्रीमती सोनाल मानसिंह
सी–304, डिफेंस कालोनी,
नई दिल्ली–110024

16. कु॰ अपर्णा सेन
8 सी, सोनाली अपार्टमेंट्स,
8/2ए, अलीपुर पार्क रोड,
कोलकाता–700027 (पश्चिम बंगाल)

17. डॉ॰ के॰ जे॰ येसूदास,
मकान नं॰ 36,
बाल्मीकि नगर
तिरूवन्नियूर,
चेन्नई (तमिलनाडु)

18. डॉ॰ एम.एस. स्वामिनाथन,
न॰ 11, रतन नगर,
तेनमपेट,
चेन्नई–600018 (तमिलनाडु)

19. डॉ॰ वेदान्तम् सत्यानारायण शर्मा,
कुच्चिपुडि 521136,
कृष्णा जिला,
आन्ध्र प्रदेश

20. डॉ॰ एन.आर. शेट्टि
सदस्य सचिव
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, जनपथ
नई दिल्ली
(पदेन)

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य (06.01.2000 तक)

1. श्रीमती सोनिया गांधी
10, जनपथ
नई दिल्ली–110001

2. श्री आर. वेंकटरमन,
5, सफदरगंज रोड,
नई दिल्ली–110001

3. श्री पी.वी. नरसिम्हाराव
9, मोती लाल नेहरु मार्ग,
नई दिल्ली–110011

4. माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री
शास्त्री भवन,
नई दिल्ली
(पदेन)

5. माननीय शहरी विकास एवं रोजगार कार्य मंत्री,
निर्माण भवन,
नई दिल्ली–110001
(पदेन)

6. अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली–110002
(पदेन)

7. उप–कुलपति
दिल्ली विश्वविद्यालय,
विश्वविद्यालय मार्ग,
दिल्ली–110007
(पदेन)

8. अध्यक्ष, साहित्य अकादमी,
रवीन्द्र भवन,
35, फिरोजशाह रोड,
नई दिल्ली–110011
(पदेन)

9. डॉ॰ मनमोहन सिंह,
9, सफदरजंग सेन,
नई दिल्ली–110011

10. श्री राम निवास मिर्धा,
के–2, तारा अपार्टमेंट्स,
अलकनन्दा एरिया,
न्यू ग्रेटर कैलास–2
नई दिल्ली–110019

11. श्री एच. वाई. शारदा प्रसाद,
19, मैत्री अपार्टमेंट्स,
ए–3, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली–110063

12. डॉ॰ कपिला वात्स्यायन
डी–1/23, सत्य मार्ग,
नई दिल्ली–110021

13. डॉ॰ एस. वरदराजन
4–ए, गिरिधर अपार्टमेंट
28, फिरोजशाह रोड,
नई दिल्ली–110001

14. प्रो॰ ए.रामचन्द्रन
22, भारती आर्टिस्ट कालोनी,
विकास मार्ग,
नई दिल्ली–110092

15. श्री एम.सी. जोशी — सदस्य सचिव
सी–2/64, शाहजहां रोड, — (पदेन)
नई दिल्ली–110011

अनुबंध–2

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्य कारणी समिति के सदस्य (31.3.2000 को)

1. डॉ॰ लक्ष्मीमल्ल सिंघवी — अध्यक्ष
18, विलिंग्डन क्रीसेंट
नई दिल्ली–110001

2. श्री अनन्त कुमार
माननीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री — सदस्य
भारत भवन,
नई दिल्ली–110001

3. श्री जगमोहन — सदस्य
माननीय शहरी विकास एवं
गरीबी उन्मूलन मंत्री,
भारत सरकार,
निर्माण भवन,
नई दिल्ली–110001

4. श्री एम.वी. कामत — सदस्य
कल्याणपुर हाउस,
तीसरी सड़क, खार,
मुंबई–400052 (महाराष्ट्र)

5. श्रीमती सोनाल मानसिंह, सदस्य
सी–304, डिफेंस कालोनी,
नई दिल्ली–110024

6. प्रो॰ पी.वी. कृष्ण भट सदस्य
सोमैया ले–आउट,
बी.एच. रोड, शिमोग,
कर्नाटक–577201

7. डॉ॰ एन.आर. शोट्टि सदस्य सचिव
सदस्य सचिव, (पदेन)
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
जनपथ, नई दिल्ली–110001

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्य

1. श्री पी.वी. नरसिम्हाराव अध्यक्ष
9, मोतीलाल नेहरु मार्ग,
नई दिल्ली–110011

2. डॉ॰ मनमोहन सिंह सदस्य
9, सफदरजंग लेन,
नई दिल्ली–110011

3. प्रो॰ यशपाल सदस्य
11–बी, सुपर डीलक्स फ्लैट्स,
सेक्टर–15–ए,
नोएडा, उत्तर प्रदेश

4.	श्री एच.वाई. शारदा प्रसाद, 19, मैत्री अपार्टमेंट्स, ए–3, पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063	सदस्य
5.	डॉ॰ कपिला वात्स्यायन डी–1/23, सत्य मार्ग, नई दिल्ली–110021	सदस्य
6.	श्री प्रकाश नारायण डी–36, प्रथम तल, जंगपुरा एक्सटेंशन, नई दिल्ली–110014	सदस्य
7.	श्री एम.सी. जोशी सी–2/64, शाहजहां रोड, नई दिल्ली–110011	सदस्य सचिव (पदेन)

अनुबंध–3

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अधिकरियों की सूची
(31.03.2000 को)
डॉ॰ एन.आर. शेट्टि, सदस्य सचिव

कलानिधि प्रभाग

1.	डॉ॰ आर. के. परती	विशेष कार्याधिकारी
2.	डॉ॰ टी.ए.वी.मूर्ति	पुस्तकालयाध्यक्ष
3.	श्री आत्म प्रकाश गक्खर	उप–पुस्तकालयाध्यक्ष
4.	सुश्री जय चंडीराम, कार्यकारी निदेशक	मीडिया प्रोडक्शन
5.	डॉ॰ सम्पत नारायण	विषय स्कॉलर
6.	श्री ऋषि पाल गुप्ता	मुख्य प्रशासन अधिकारी (कलानिधि)
7.	श्री प्रमोद किशन	अनुलिपिक अधिकारी
8.	सुश्री आशिमा हेलन	वरिष्ठ वीडियो सम्पादक

कलाकोश प्रभाग
मुख्यालय

1.	पं॰ सातकड़ि मुखोपाध्याय	समन्वायक
2.	डॉ॰ मधु खन्ना	एसोशिएट प्रोफेसर
3.	श्री टी. राजगोपालन	प्रशासन अधिकारी
4.	डॉ॰ नारायण दत्त शर्मा	अनुसंधान अधिकारी
5.	डॉ॰ अद्वैतवादिनी कौल	सहायक सम्पादक
6.	डॉ॰ विजय शंकर शुक्ल	अनुसंधान अधिकारी
7.	डॉ॰ राधा बनर्जी	अनुसंधान सहयोगी

वाराणसी कार्यालय

8.	डॉ॰ वी.एन. मिश्र	अवैतनिक सलाहकार
9.	डा॰ आर.सी. शर्मा	अवैतनिक समन्वायक
10.	डॉ॰ उर्मिला शर्मा	अनुसंधान अधिकारी
12.	डॉ॰ नरसिंह चरण पण्डा	अनुसंधान अधिकारी

जनपद सम्पदा प्रभाग

1.	डॉ॰ बैद्यनाथ सरस्वती	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
2.	डॉ॰ वाई.पी. गुप्ता	प्रशासन अधिकारी
3.	डॉ॰ मौलि कौशल	अनुसंधान अधिकारी
4.	डॉ॰ बंसीलाल मल्ला	अनुसंधान सहयोगी
5.	डॉ॰ नीता माथुर	अनुसंधान सहयोगी
6.	डॉ॰ रामाकर पंत	अनुसंधान सहयोगी

इम्फाल कार्यालय

7.	श्री अरिबाम श्याम शर्मा	अवैतनिक समन्वायक

कलादर्शन प्रभाग

1.	श्री बसंत कुमार	सलाहकार (क.द.)
2.	कु॰ सबीहा ए. जैदी	कार्यक्रम निदेशक
3.	श्री वाई.पी. गुप्ता	प्रशासन अधिकारी

सूत्रधार प्रभाग

1.	श्रीमती नीना रंजन	संयुक्त सचिव (आई.डी.)

2.	श्री एस.पी. अग्रवाल	मुख्य लेखा अधिकारी
3.	श्री एस.एम. महाजन	मुख्य लेखा अधिकारी
4.	श्री संजय गोयल	निदेशक (मल्टीमीडिया)
5.	श्री प्रतापानन्द झा	परियोजना प्रबन्धक
6.	श्री आर.सी. सहोत्रा	निजी सचिव
7.	श्री पी.पी. माधवन्	निजी सचिव
8.	श्री ओ.पी. डोगरा	अवर सचिव (एस.डी. व आई.डी.)
9.	श्री एन.जे. थॉमस	अवर सचिव (आई.डी.पी.)
10.	श्री ओ.पी.शर्मा	अवर सचिव (एस.डी.व के.एन.सी)
11.	श्री के.डी. खन्ना	प्रशासन अधिकारी (ए.डी.व एस. व एस)
12.	श्री आर. हरप्रसाद	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
13.	श्री एस.पी. मंगला	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
14.	श्रीमती नीलम गौतम	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
15.	श्री जे.पी.एस. त्यागी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में वरिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं/कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं की सूची

कलानिधि (संदर्भ पुस्तकालय)

1. श्री जे.मोहन, कनिष्ठ माइक्रोफिल्म निर्माण परियोजना सहयोगी (मद्रास)
2. श्री पी.पी. श्रीधर उपाध्याय, कनिष्ठ माइक्रोफिल्म निर्माण परियोजना सहयोगी (मद्रास)
3. श्रीमती वी.पार्वतन, कनिष्ठ माइक्रोफिल्म निर्माण परियोजना सहयोगी (मद्रास)

कलाकोश प्रभाग

1. डॉ॰ (श्रीमती) सुषमा जाडू, वरिष्ठ अध्येता

2. डॉ॰ (श्रीमती) संघमित्रा बसु, वरिष्ठ अध्येता
3. श्री सुधीर कुमार लाल, कनिष्ठ अध्येता
4. श्री अजय कुमार मिश्र, कनिष्ठ अध्येता

चीनी–भारतीय अध्ययन कक्ष

1. सुश्री हेम कुसुम, कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता

जनपद–सम्पदा प्रभाग

1. श्री कैलाश कुमार मिश्र, कनिष्ठ अध्येता

अप्रैल, 1999–मार्च, 2000 के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में हुई प्रदर्शनियां

क्र॰ सं॰	प्रदर्शनी का शीर्षक	अवधि
1.	पंचतंत्र की कहानियों पर बच्चों की चित्रकरियां	21 सितम्बर से 20 नवम्बर, 1999
2.	कलेवाला–फिनलैंड का राष्ट्रीय महाकाव्य	11 से 22 अक्टूबर, 1999
3.	स्वप्न के कुछ बच्चे	16 नवंबर से 5 दिसंबर, 1999
4.	अनन्त क्षितिज	4 से 30 जनवरी, 2000
5.	प्रतिमाएं/आइकॉन्स	18 फरवरी से 5 मार्च, 2000
6.	हैपनिंग्स – ए फोटो डायरी ऑफ लुमिनस मोमेंट्स (घटनाएं–ज्योजिर्मय क्षणों की फोटो–डायरी)	9 से 31 मार्च, 2000
7.	भारत –सं॰ अमेरिका संबंध	15 से 25 मार्च, 2000

अनुबन्ध–6

अप्रैल, 1999–मार्च, 2000 के दौरान हुई संगोष्ठियां/सम्मेलन/कार्यशालाएं

क्रं॰ सं॰	शीर्षिक	दिनांक	प्रभाग का नाम
1.	राष्ट्रीय प्रोद्योगिकी दिवस समारोह, नई दिल्ली में	11 मई, 1999	इ.गा.रा.क.के. यू.एन.डी.पी.
2.	"राजभाषा और शास्त्र" गोष्ठी, दिवस के उपलक्ष्य में	14 सितंबर, 1999	जनपद सम्पदा
3.	"पाण्डुलिपि विज्ञान और पुरालिपिशास्त्र विषय पर कार्यशाला, पुणे, महाराष्ट्र में	13–31 दिसंबर, 1999	कलाकोश
4.	"असली विरासत" (वर्चुचल हेरिटेज) विषय पर कार्यशाला, ब्रिटिश काउन्सिल डिविजन के सहयोग से, नई दिल्ली में	1 फरवरी, 2000	कलादर्शन
5.	"वास्तु–विद्याः शास्त्र एवं प्रयोग" विषय पर संगोष्ठी, कालिकट में	23–26 फरवरी, 2000	कलादर्शन

अनुबंध–7

अप्रैल, 1999–मार्च, 2000 के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में निर्मित फिल्मों/वीडियों प्रलेखनों की सूची

1. फिल्मः "एक थी गुलाब" विश्व्यात नौटंकी कलाकार और पद्मश्री विभूषित

(दिव.) गुलाब बाई के विषय में, निर्माताः डॉ॰ कृष्ण राघव।

2. वीडियो प्रलेखनः "नवकलेवर", उड़ीसा में पुरी के मन्दिरों में विद्यमान देव प्रतिमाओं के नए रूप में प्रस्तुतीकरण के लिए एक असाधारण पर्व जो चन्द्रमा की विशिष्ट स्थिति के अनुसार 12 या 17 वर्षों में एक बार आता है, निर्माताः पृथ्वी राज मिश्र।

3. वीडियो प्रलेखनः एलिजबेथ ब्रूनर के साथ साक्षात्कार।

4. एक प्रलेखनः "नाद नगर ना उजारो" –ध्रुपद की विख्यात मर्मज्ञ पद्मश्री असगरी बाई पर फिल्म।

5. नृत्य नाटिकाः "विनिंग ऑफ फ्रैंड्स" (मित्र लाभ) – एक अद्भुत शैली में रामायण का प्रस्तुतीकरण, जिसमें इस महाकाव्य की कहानी तथा परंपरागत पात्रों का अभिनय करने के लिए अभिनेता कठपुतलियों की तरह नृत्य तथा हावभाव प्रदर्शित करते है, निर्माताः सरस्वती स्वामिनाथन।

6. प्रलेखनः कथाकलि–भारत की एक शास्त्रीय नृत्य शैली। इसकी परम्परा बहुत पुरानी है। इस फिल्म में कथाकलि के कुछ सुप्रसिद्व गुरूजनों के सघन प्रशिक्षण तथा शिक्षण की तकनीकों को प्रस्तुत किया गया है, निर्माताः एन. राधाकृष्णन।

महान गुरुजन श्रृंखला

आन्तरिक रूप से तैयार किए गए कुछ प्रमुख प्रलेखन कला, साहित्य, संगीत और नृत्य क्षेत्र के निम्नलिखित विख्यात महानुभावों के साथ किए गए साक्षात्कारों के विषय में हैः

1. विख्यात उपन्यासकार डॉ॰ मुल्कराज आनन्द के साथ साक्षात्कार–डॉ॰ कपिला वात्स्यायन द्वारा,

2. सुप्रसिद्व शास्त्रीय गायिका श्रीमती सुमति मुटाटकर के साथ साक्षात्कार – श्रीमती शानो खुराना द्वारा।

अर्जन/प्राप्ति

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने जन–जीवन के भिन्न–भिन्न पक्षों पर निम्नलिखित उल्लेखनीय वीडियो प्रलेखन विभिन्न स्रोतों से प्राप्त किए।

1. तेय्यम दि एनुअल विजिट ऑफ गॉड विष्णुमूर्ति" भगवान विष्णु मूर्ति का वार्षिक दर्शनागमन, निर्माताः एरिक डि माकर,

2. "दि मिथ ऑफ दि क्लैश ऑफ सिविलाइजेशन्स" (सभ्यताओं के संघर्ष का मिथक), निर्माताःएडवर्ड सैइड,

3. "ऑन ऑरिएंटलिज्म" निर्माताः एडवर्ड सैइड।

4. "दि ऑफिशल आर्ट फोर्म" (वीएचएस) – 1857 से 1920 के दौरान भारतीय चित्रकारियों के इतिहास और भारतीय कला पर युरोपीय कला के प्रभाव का प्रलेखन।

5. "बेंगॉल रिनेसां" (वीएचएस)–उस सांस्कृतिक पुनर्जागरण का, जो 19वीं शताब्दी में तथा 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षो में हुआ था, राजा राममोहन राय, देवेन्द्र नाथ टैगोर और केशव चन्द्र सेन के विशेष संदर्भ में, प्रलेख/चित्रण।

6. "ढोंगरी भील्स" –छह फिल्में जिनमें ढोंगरी भीलों के नवरात्र और होली उत्सव तथा अन्य त्योहारों एवं कर्मकाण्डीय प्रस्तुतियाँ का प्रलेखन किया गया है।

आन्तरिक प्रलेखन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा आयोजित विभिन्न संगोष्ठियों कार्यशालाओं/समाराहों के विषय में ऑडियो तथा विज्युअल प्रलेखन कार्य आन्तरिक रूप में केन्द्र के ही तकनीशनों द्वारा किए गए। इनमें से कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य थेः उस्ताद फहीमुद्दीन डागर के ध्रुपद गायन की दस घंटे की रेकार्डिंग और बृहदीश्वर मंदिर में कुंभाभिषेकम एवं अन्य समारोहों की पच्चीस घंटे की रेकार्डिंग का एक घंटे के कार्यक्रम के रूप में सम्पादन। इसके अलावा, यू.एन.डी.पी. परियोजनाओं के लिए ऑडियो–रेकार्डिंग का कार्य भी केन्द्र के तकनीशनों द्वारा सम्पन्न किया गया।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में अप्रैल, 1999–मार्च, 2000 के दौरान आयोजित व्याख्यानों की तालिका

क्रम	विषय	दिनांक	वक्ता का नाम
1.	डमरू वादन एवं जागर प्रक्रिया	13 अप्रैल, 1999	श्री चंद्र सिंह राही
2.	विज्ञान, प्रौद्योगिकी और संस्कृति, 10वीं से 18वीं शती तक	14 मई, 1999	डॉ॰ आर. रहमान
3.	संथाल विश्वदृष्टि एवं जीवन में नारी की उपस्थिति	20 मई, 1999	डॉ॰ मधु खन्ना
4.	राजस्थान में जल संग्रह की परम्परा	22 जून, 1999	श्री अनुपम मिश्र
5.	भारतीय अध्यात्म विद्या में पात्रता व अपात्रता	16 जुलाई, 1999	आचार्य पं॰ अशोक द्विवेदी
6.	पारम्परिक समाज में स्त्रियों की स्थिति	22 जुलाई, 1999	डॉ॰ सरोजिनी महिषी
7.	ऋग्वैदिक कविता	22 जुलाई, 1999	श्री भगवान सिंह
8.	चौल कला के विकास में बंगाल का योगदान	6 अगस्त, 1999	डॉ॰ आर. नागस्वामी
9.	नदी के गर्भ में: नर्मदा घाटी में भिलाल जीवन शैली	9 सितंबर, 1999	डॉ॰ अमिता बविस्कार

10.	आड़े जुते खेत—मनो—भौतिक निर्वहणीयता का उदाहरण	15 सितंबर, 1999	डॉ॰ रूडोल्फ हॉगर
11.	4—डी डिजाइनः मौखिक परंपरा, परस्पर सक्रिय बहुमाध्यमों के परिरक्षण के लिए मॉडल	6 अक्टूबर, 1999	डॉ॰ सस्किया कैरसेन बूम
12.	जीवन की गुणवत्ता के विषय में गांधी जी के विचारः नैतिक मूल्यों पर बल	8 अक्टूबर, 1999	परिचर्चा, गुणवत्ता सुनिश्चयन समाज के सहयोग से
13.	"कलेवाला" की भारतीय स्वीकृति	13 अक्टूबर,1999	श्री विष्णु खरे
14.	"सिरि" महाकाव्यः पाठ एवं प्रस्तुति	14 अक्टूबर, 1999	प्रो॰ बी.ए. विवेक राय
15.	हड़प्पाई स्थलः राखी गढ़ी की खुदाई	21 अक्टूबर, 1999	डॉ॰ अमरेन्द्र नाथ
16.	बौद्ध कला में जातक कथाएं—उनके अध्ययन की पद्धति	18 नवंबर, 1999	प्रो॰ रतन परिमू
17.	भक्ति संगीत कार्यक्रम	25 नवंबर, 1999	श्रीमती शुभश्री राममूर्ति
18.	असली शिक्षा—सर्वव्यापी शिक्षा प्राप्ति की दिशा में	30 नवंबर, 1999	डॉ॰ एम.एम. पंत
19.	एक भारतीय कलाकार के पश्चिम में विकास की अवधि	14 दिसंबर, 1999	प्रो॰ एस.वी. रामाराव

20.	पश्चिम हिमालय क्षेत्र की प्राचीन भारत–तिब्बती बौद्ध चित्रकारियों में हिन्दू एवं अखिलभारतीय देवताओं का चित्रण	18 दिसंबर, 1999	डा॰ क्रिश्चियन लुक्जैनित्स
21.	काल का सिद्धान्त	23 दिसंबर, 1999	डॉ॰ जे.के. बड़ठाकुर
22.	प्राचीन निकट–पूर्वी एवं भारतीय धर्मों में ब्रह्माण्ड विज्ञान एवं नैतिकता	6 जनवरी, 2000	डॉ॰ ऐलेक्जेंडर जैकब
23.	नृत्य का सस्वरीकरण	16 जनवरी, 2000	प्रो॰ सोंड्र प्रैले
24.	महात्मा एवं कविः गांधी एवं टैगोर के विचार, राष्ट्रीय जीवन में संस्कृति का स्थान	17 व 18 जनवरी, 2000	प्रो॰ सब्यसाची भट्टाचार्य
25.	मन्तेस्वामी की परंपरा का सार्थकीकरणः प्रति–संस्कृति के लोकप्रिय लोक महाकाव्य के प्रति नाटककार का दृष्टिकोण	8 फरवरी, 2000	डॉ॰ शिव प्रकाश
26.	वेद और विश्व के अन्य धर्म	17 फरवरी, 2000	डॉ॰ डेविड फाले
27.	भारतीय संस्कृति, धर्म एवं नारियां	21 फरवरी, 2000	डॉ॰ डैगमर
28.	हिन्दी और उसकी कृतियों की व्याकरणिक श्रेणी और	28 फरवरी, 2000	डॉ॰ स्वेतिस्लाव कोस्टिक

29.	भारतीय साहित्य काव्य में आधुनिकीकरण–बंगाल के विशेष संदर्भ में	28 फरवरी, 2000	डा॰ ब्लैंका कॉण्ट कोवा
30.	चीन में शास्त्रीय तिब्बती अध्ययन	1 मार्च, 2000	प्रा॰ वांग याओ
31.	खजुराहो के लिए संरक्षण एवं विकास की रणनीति	15 मार्च, 2000	डॉ॰ शोभिता पुंज
32.	संस्कृत साहित्य एवं संस्कृति को ब्राह्मणेतर योगदान	30 मार्च, 2000	पं॰ सातकड़ि मुखोपाध्याय

अप्रैल, 1999 से मार्च, 2000 के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशन

1. कलातत्त्वकोशः खण्ड 4 मैनिफैस्टेशन ऑफ नेचर : सृष्टि–विस्तार

इस खण्ड में उन बीजभूत पारिभाषिक शब्दों का समावेश है जो सृष्टि के विस्तार में महाभूतों के अनुपूरक है। इस खंड में जिन पारिभाषिक शब्दों को विवेचन किया गया है : इन्द्रिय, द्रव्य, धातु, गुण/दोष, अधिभूत/अधिदैव/अध्यात्म, स्थूल/सूक्ष्म/पर, सृष्टि/स्थिति/संहार।

इस खंड में योगदान वालों में शामिल हैः प्रेमलता शर्मा, सरोजा भाटे, एल.एम. सिंह, सातकड़ि मुखोपध्याय, आर.एस. भट्टाचार्य, एच.एन. चक्रवर्ती, एस.के. लाल, रत्ना बसु और संघमित्रा बसु।

प्रधान सम्पादक कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : अद्वैतवादिनी कौल, और
सुकुमार चट्टोपाध्याय
1999,पृष्ठः XXXVIII + 429, रेखाचित्र, ग्रंथसूची, सूचक,
मूल्य 450 रुपए

2. काण्वशतपथब्राह्मणम् खण्ड 3 (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं.30)

यह पहला अवसर है जबकि शुक्ल यजुर्वेद की काण्व शाखा के शतपथ ब्राह्मण का एक सम्पूर्ण आलोचनात्मक संस्करण अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया गया है। इस संस्करण में, तेलुगु लिपि में प्रकाशित पाठों के अलावा, कुछ अन्य पाण्डुलिपियों में उपलब्ध पाठान्तरों को भी ध्यान में रखा गया है, जो प्रो॰ कैलेंड को उपलब्ध नहीं थे, जिन्होंने इसके प्रथम सात कांडों का समालोचनात्मक संस्करण निकाला था। यह सम्पूर्ण अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत करने का भी प्रथम प्रयास है, निस्संदेह माध्यन्दिन तथा काण्व शाखा

का शतपथ ब्राह्मण के पाठों में उसके अष्टम से षोडश तक के काण्डों में कोई विशेष अन्तर नहीं है और पूर्वोक्त का प्रो॰ इंगलिंग का अनुवाद उपलब्ध है फिर भी श्रौत यज्ञों के कर्मकांडों में सक्रिय रूप से संलग्न परम्परागत विद्वानों के साथ विशद विचार–विमर्श के फलस्वरूप परवर्ती भाग का नए सिरे से अनुवाद करना आवश्यक समझा गया।

पाठान्तर–विशेष को अपनाने के आधार बताने के लिए मूलपाठ संबंधी टिप्पणियां, मूलपाठ के अध्ययन के फलस्वरूप उत्पन्न हुए कुछ चुने हुए प्रश्नों पर चर्चा स्वरूप "विमर्श" शीर्षक खण्ड, ब्राह्मण ग्रंथों के अनुसार विषयवस्तु की विस्तृत सूची और पारिभाषिक शब्दों की सूची इस प्रयास की कुछ अतिरिक्त विशिष्टताएं है। श्रौत यज्ञों के विशेषज्ञ परम्परागत विद्वानों से प्राप्त सुझाव और मार्गदर्शन इस संस्करण की श्रेष्ठता के प्रतीक हैं।

प्रथम खण्ड में पहले काण्ड का पाठ, अनुवाद के साथ पाठविमर्श सहित प्रस्तुत किया गया है। दूसरे खण्ड दूसरा तथा तीसरा काण्ड पाठ्य टिप्पणियों के साथ समाहित है। प्रस्तुत खण्ड में चतुर्थ और पंचम काण्ड दिए गए हैं। शेष काण्डों को कलामूलशास्त्र ग्रंथमाला के अन्य खण्डों में प्रकाशित किया जाएगा।

प्रधान सम्पादकः कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : सी.आर. स्वामिनाथन
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा.लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–110007
2000, पृष्ठः XXVII + 414 मूल्य : 900 रुपए

3. बारोक इंडिया

दि निओ–रोमन रिलीजस आर्किटेक्चर ऑफ साउथ एशियाः
ए ग्लोबल स्टाइलिस्टिक सर्वे

बारोक इण्डिया 40 से भी अधिक वर्षों के शोधकार्य का प्रतिफल है। यह एक ऐसे विद्वान का शोधकार्य है जो भारतीय कला (हिन्दू, बौद्ध और जैन) के इतिहास में व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित है। इसके अतिरिक्त यह विश्वभर में फैली हुई इस्लामिक स्थापत्य–शिल्प का सर्वेक्षण कर्ता है, जिसमें भारतीय इस्लामिक परंपराएं भी समाविष्ट हैं। लेखक का विश्वास है कि भारतीय बारोक, अथवा अधिक सही–सही कहें तो, भारतीय नव–रोमन को तब तक ठीक से हृदयंगम नहीं किया जा सकता, जबतक कि उन स्थापत्य शैलियों को समझ नहीं लिया जाए जो इससे पहले प्रायद्वीप पर विद्यमान रहीं और जिनका इस शैली पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ा।

अपने विवेचन में, विद्वान लेखक ने नव–रोमन के एक सुसंगत सौन्दर्य शास्त्रीय सिद्धांत की रूपरेखा प्रस्तुत करने, उसके पांच प्रमुख रूप (रेनेसां) पुनर्जागरण मैनेरिज्म, बारोक, रोकोको और नव–श्रेण्यवाद को नव–रोमन सारत्व की अभिव्यक्ति के रूप में चित्रित करने का प्रयत्न किया है और एतदर्थ उन्होंने एक निश्चित क्रम में उन्हें अंतर्निहित रूप में एक दूसरे से विकसित होते हुए और स्थानिक रूप से उनमें से समद्ध स्थानिक विषय–प्रकार अंकुरित होते हुए दर्शाया है, जिनसे स्पष्टतः मौलिकता के साथ–साथ अन्य स्थानीय स्थापत्य शैलियों के साथ घुलमिल जाने की क्षमता भी उजागर होती है। उनकी सोच है कि इस सिद्धांत ने उन्हें भारतीय नव–रोमन की मौलिकता को पहचानने और नव–रोमन तत्व में आत्मसात् की गई सामग्री का एकीकरण करते हुए, प्रायद्वीप की भारतीय तथा नव–इस्लामिक शैलियों से क्या–क्या ग्रहण किया गया है, इसका वर्णन करने की क्षमता प्रदान की है।

लेखक : जोस परैरा
प्रकाशक : कपिला वात्स्यायन

सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा आर्यन बुक्स इंटरनेशनल,
पूजा अपार्टमेंट, 4 बी, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली–110002
2000, पृष्ठः XXX 498, चित्र 217, रेखाचित्र 67
मूल्यः 2500

4. प्लेस नेम्स इन कश्मीर

नामों का आविष्कार मानव जाति की एक महानतम उपलब्धि है और स्थानों को नाम देने की परंपरा उतनी ही पुरानी है जितनी कि स्वयं मनुष्य की कहानी। इसलिए मन में यह जानने की उत्सुकता उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि अमुक स्थान का अमुक नाम कैसे अथवा क्यों पड़ा। कुछ स्थानों के नाम तो ऐसे हैं कि उनमे मानव की विभिन्न प्रकार की विस्मयकारी गतिविधियों का पता चलता है। ऐसे असंख्य स्थान है, जो अपने नामकरण के लिए उन सामान्य लोगों के आभारी हैं जिन्होने घर बसाने के लिए पेड़ काटे, झाड़–झंखाड़ साफ किए, नालियां खोदी, नए पौधे लगाए, फसलें उपजाई और प्रस्थान करने से पहले अपनी बस्ती को कोई नाम दे गए।

ऐसे नर–नारियों ने अपनी आंखें बंद करके काम नहीं किया। प्रकृति की गोद में पूर्ण जागृत रहते हुए वे नामकरण के इस शौक के प्रति सदा जागरूक रहे और उन्होंने गशिबरारी (चमक यानि आभा की देवी, कश्मीर), टेम्स (काली नदी, केल्टिक टेमेसिस से) येकोड (वन में झील–तमिलानाडू), निप्पॉन (उगते हुए सूरज का देश–जापान), लिओन (चमकता हुआ नगर–स्पेन) और ऐसे ही अन्य हजारों–लाखों नाम घड़ दिए।

नामों के साथ ही लोककथाएं, परंपराएं, पुराणशास्त्र, इतिहास, सामाजिक व्यवहार, मानव विज्ञान और ऐसे ज्ञान–विज्ञान का उद्‌भव हुआ जो इतना परिष्कृत तो नहीं पर सहज–स्वाभाविक और शब्दाडंबर तथा पाखंड से परे था। इनके बिना हमारी सभ्यता का अस्तित्व कहां संभव था। स्थानों के नाम मानव अभिरूचि की सामग्री से वैसे ही ओतप्रोत जैसे कि मधुमक्खी का छता शहद से ठसाठस भरा होता है।

आलोच्य अध्ययन में लेखक द्वय ने कश्मीर में कई सौ स्थान–नामों की व्युत्पत्ति प्रस्तुत की है। उनके उद्‌भव के अनुसार उनका विश्लेषण तथा वर्गीकरण किए जाने की प्रक्रिया से आनुषंगिक रूप से अनेक ऐसे रोचक तथ्यों का पता चला है जो सूक्ष्म इतिहास, सामाजिक व्यवहार, मानव विज्ञान आदि की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इससे भी आधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसे नाम अर्थविज्ञान, उच्चारण तथा ऐसी ही अन्य तत्वों के माध्यम से क्षेत्रीय भाषाओं के विकास की रूपरेखा से अवगत कराते हैं। यदि संबोधित स्थान नामों के बारे में कामचलाऊ पर्याप्त जानकारी नहीं होगी तो क्षेत्रीय भाषाओं का अध्ययन अधूरा ही रहेगा।

प्रधान संपादकः एस.रामकृष्णन
लेखकः एस.एल. साधु और बी. के. रैना
सह प्रकाशक : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
और भारतीय विद्या भवन, के. एम. मुंशी मार्ग,
मुंबई, 400007,
2000, पृष्ठ : IV + 196, मूल्यः 275 रुपए

5. इन फेवर ऑफ गोविन्द देव जी : हिस्टोरिकल डॉक्यूमेंट्स रिलेटिंग टू ए डीइटि ऑफ वृन्दाबन एण्ड ईस्टर्न राजस्थान

आमेर के कछवाहा राजवंश के पारिवारिक इष्ट देव श्री गोविन्द जी अब अपनी अर्द्धांगिनी राधा के साथ जयपुर में निवास करते हैं। किंतु वे सर्वप्रथम वृन्दाबन में प्रकट हुए थे, जहां उन्हें राजा मानसिंह द्वारा निर्मित विशाल मंदिर में निवास के लिए लाया गया और 1660 में वहां उनका प्रतिष्ठापन एवं अभिषेक किया गया। गोविन्द देव जी राजा मानसिंह की शक्ति के प्रतीक थे और मुगल बादशाह और कछवाहा वंश के बीच राजनीतिक सक्रिय संबंधों के केन्द्र बिन्दु बन गए और इस प्रकार उन्होंने दिल्ली सम्राट तथा आमेर नरेश दोनों का संरक्षकत्व प्राप्त किया। सत्रहवीं शताब्दी के अंत में, गोविन्द देव जी और

राधा को मूर्तिभंजकों के हाथों उनके विनाश से बचाने के लिए वृन्दाबन की अधिष्ठात्री वृन्दादेवी के साथ आमेर के राज्य क्षेत्र में ले आया गया। अंततोगत्वा गोविन्द देव जी तथा उनकी अर्द्धांगिनी को महाराजा सवाई जयसिंह की नई राजधानी जयपुर के राजप्रसादों के परिसर में एक भव्य मंदिर में स्थापित कर दिया गया। इस प्रकार क्षेत्रीय शक्ति के प्रतीक के रूप में गोविन्द देव जी की प्रगतिष्ठा के फलस्वरूप कछवाहों के राज्य में गौडीय वैष्णवधर्म तथा गोविन्द देव जी के अभिरक्षकों का उत्थान हुआ।

इस पुस्तक में प्रकाशित प्रलेख साढ़े तीन शताब्दी से भी अधिक लंबे काल के है। ये प्रलेख वित्तीय, राजकोषीय तथा अन्य सरकारी विषयों से संबंधित हैं और अपनी निराली शैली में, गोविन्द देव जी के साथ घटे घटनाचक्र का विवरण प्रस्तुत करते हैं। धार्मिक नीति के साक्ष्य के रूप में महत्वपूर्ण होने के साथ–साथ, ये दस्तावेज कछवाहा शासन के राजनयिक एवं प्रशासनिक आचार–व्यवहार को अभिव्यक्त करते हैं, यह एक ऐसा पक्ष है जिसे लेखक ने विशेष रूप से उजागर करने का प्रयास किया है।

सम्पादक : मोनिका हॉर्स्टिमैन
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
तथा मनोहर पब्लिशर्स एंड डिस्टिब्यूटर्स,
2/6 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली – 110001
1999, पृष्ठः 374, मूल्य 1250 रुपए

6. कल्चर ऑफ पीस

घूमते हुए कालचक्र के साथ इन शताब्दियों में, "शान्ति" धार्मिक क्षेत्र में और इससे भी अधिक सामाजिक–संदर्भों में, एक दुर्लभ वस्तु के रूप में भारी चिन्ता का विषय बन गई है। तथापि विडंबना का विषय यह है कि विश्व इतिहास

लगातार चलने वाले युद्धों और हिंसा कर्मों की ही एक लंबी कहानी है। बहुत दिन नहीं हुए, हिटलर की पराजय के उपरांत, संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना ने एक नई, युद्ध–मुक्त विश्व–व्यवस्था की आशा बंधाई थी, लेकिन आज के शत्रुतापूर्ण परिदृश्य ने उस आशा पर पानी फेर दिया है।

प्रस्तुत ग्रंथों में लेखकों ने भिन्न–भिन्न विषयों एवं शास्त्रों की संकीर्ण सीमाओं को तोड़ कर, बहुविध श्रोताओं के साथ मिलकर शान्ति के लिए अपनी चिन्ताएं अभिव्यक्त की हैं और शान्ति की संस्कृति में अपनी आस्था व्यक्त करते हुए अपने ऐन्द्रिय/बौद्धिक/आध्यात्मित्क अनुभवों का उल्लेख किया है। शान्तिनाशक तत्वों, परिस्थितियों, भौगोलिक अंचलों आदि का विशेषोल्लेख करते हुए, इस ग्रंथ में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि शिक्षा, व्यक्तिगत दायित्व, दर्शन, नैतिकता, कलात्मक सृजनशीलता, सामूहिक आध्यात्मिकता, गांधी जी की अहिंसा, सूफियों का सार्वभौम प्यार, और बुद्ध की करुणा, धृति एवं समबुद्धि ऐसे तत्व हैं जो इस निराशा के वातावरण में भी, शान्ति की संस्कृति को बल प्रदान कर सकते है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
प्राक्कथन : बैद्यनाथ सरस्वती
सह–प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
तथा डी.के. प्रिंटवर्ल्ड
एफ 52, बालि नगर, नई दिल्ली–110015
1999, पृष्ठः 262, मूल्य 600 रुपए